COLOUR

COLOUR

COLOUR

COLOUR

आत्मकथा : सबसे अलग... सबसे जुदा...

जियो तो बिंदास जियो

भाग 2 (2026)

• लेखक •
दिनेश सोलंकी

9 789389 215793

सहयोगी प्रकाशन : **प्रिय पाठक**
403, प्रजापति टॉवर, इंद्रपुरी कॉलोनी, किशनगंज, महू, जिला इंदौर (म.प्र.)
संपर्क : 9826013941 ई-मेल : priyapathak1957@gmail.com

सर्वाधिकार : © दिनेश सोलंकी

जियो तो बिंदास जियो

ISBN : 978-93-89215-79-3

संस्मय प्रकाशन
www.sansmay.com

कार्यालय : 8, सी.एस.सी., ए.डी. ब्लॉक, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

दूरभाष : (कार्या.) 8800248432, 9013466326 (व्हाट्सअप) (मो.) 7049577455

अणुडाक : sansmayprakashan@gmail.com
अंतरताना : wwwsansmay.com

द्वितीय संस्करण: 2026

मूल्य : 300/- रुपए

मुद्रक : अरणा पेपर एण्ड प्रिंटर्स, इंदौर (म.प्र.)
डिजाइन : राहुल ग्राफिक्स, इंदौर, मो. 7000707370

JIO TO BINDAAS JIO... *by Dinesh Solanki*

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा संस्मय प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक ज़िम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. संक्षिप्त परिचय..8
2. मेरी बात..9
3. 1. शुभकामना संदेश...10
4. दो विवाह उपरांत मेरे अनुभव से निष्कर्ष..24
5. हरेक के दाम्पत्य जीवन में उतार चढ़ाव आते हैं......................................26
6. मेरे जीवन की किताब हमेशा खुले पन्नों की तरह रही................................27
7. पत्रकारिता में जेब से अक्सर पैसे लगे, मगर सम्मान खूब पाया......................29
8. जीवन का नया अध्याय इस तरह पनपने लगा था.....................................30
9. कनिका का मेरे जीवन में पदार्पण कुछ इस तरह से हुआ..............................32
10. कहानी ने खोले नए पन्ने इस तरह...33
11. सच बोलेने का दंड मिला, हुए कुँवारे..34
12. उथल-पुथल लेकर आया वर्ष 2023..39
13. गोवा के सफर ने ही पक्की मुहर लगाई..40
14. अस्पताल में ऑपरेशन के वक्त परिवार का कोई नहीं................................41
15. विवाह विच्छेद पर न्यायाधीश ने मुहर लगा दी..42
16. अंधा प्यार... जो उम्र का अंतर भी नहीं देखता..44
17. गीतों से शुरू हुआ सफर तीन साल बाद प्यार में बदला.............................45
18. छोटे से बुलावे पर चाहने वाले रिसेप्शन में आए.......................................46
19. अब तक दो बार त्यागने पड़े घर...47
20. बेटों की दी सीख याद रहेगी...49
21. एक मजाक... मेरी लाइफ स्टोरी पर फिल्म भी बन सकती है...........................51
22. कुछ नहीं था मैं... बस सुंदर लेखनी ने पत्रकार बना दिया............................52
23. पत्रकारिता में जब दबंगाई आई और महू के दंगों पर चली तीखी कलम.............53
24. काश मेरे पास एक करोड़ होते तो अखबार दैनिक बन जाता..........................56
25. पत्रकारिता जीवन में असली सम्मान मुख्यमंत्री के हाथों मिला.........................57
26. लॉण्ड्री भागीदारी भी किसी रेकार्ड से कम नहीं..59
27. हम पिता-पुत्र मौत के मुंह से बाहर आए...50
28. कोरोना में अकेले रात को सफर किया अपने पाठकों की खातिर......................62
29. मौसम विशेषज्ञ का दर्जा दिया मीडियावाला ने..65
30. फीचर फिल्मों के बाद लघु फिल्मों से जुड़ा नाता..69
31. छावनी परिषद की भ्रष्ट कार्यप्रणाली के खिलाफ चली तीखी कलम.................71

संक्षिप्त परिचय

दिनेश सोलंकी

पिता : स्व. श्री मूलचंद सोलंकी

पता : 403, प्रजापति टॉवर, इंद्रपुरी कॉलोनी, किसनगंज, महू -45344 (मप्र)

संपर्क : 9826013941

जन्म : 30 जुलाई 1957, महू मध्यप्रदेश

शिक्षा : एम कॉम, एलएल.बी, पीजी इन जर्नालिज्म

पत्रकारिता अनुभव : 1979 से पत्र लेखन

1980 से स्वतंत्र पत्रकारिता

2001 से साप्ताहिक प्रिय पाठक का प्रकाशन

सोशल मीडिया रिपोर्टिंग,

मौसम वैज्ञानिक (मीडियावाला, सोशल मीडिया)

अन्य : बतौर अभिनय रंगमंच, स्वलिखित आदि नाटकों का मंचन,

टीवी सीरियल, फीचर फिल्म, शॉर्ट फिल्म,

संगीत : महू सांस्कृतिक मंच सहित अन्य बैनर तले संगीत आयोजन और गायन

फोटोग्राफी : 1980 से नियमित

मेरी बात

दिनेश सोलंकी

बात जब आत्मकथा लिखने पर आती है तो वो अनछुए पहलू भी सामने लाने पड़ते हैं जो दिल के गुबार या जिंदगी के संघर्ष और हालातों के किस्से होते हैं, जिनका सच दिखाना दूसरों के जीवन के लिये एक सबक, सीख बन जाता है और सम्भवतः उन्हें अपनी शेष या चलती जिंदगी में कुछ समझने और सम्हलने के अवसर मिल जाते हैं। मेरी पहली पुस्तक के दूसरे भाग का यही उद्देश्य है कि मैं ये आत्मकथा लिखते समय किसी के निजी जीवन के लिये अवरोध या मुसीबत न बनूँ बस, पाठक इस सत्य को पहचाने कि जिंदगी के मायने क्या होते हैं... बोले तो संघर्ष या बकवास... इसी जिंदगी से मैंने सीखी सत्य की परिभाषा। सत्य कहना सुकून भरा होता है या मूर्खता.. इसे समझना, जानना उतना ही कठिन... तो ऐसा सत्य कहाँ-कहाँ कहना उचित होता होगा और कहाँ कहना अनुचित, ये ही समझना जरुरी होता है... क्योंकि कई बार ऐसे सत्य जिंदगी दांव पर लगा जाते हैं। ये सही है कि इंसानी जीवन जीना संघर्ष का ही दूसरा नाम है, जिससे निपटते रहना ही आपकी सफलता का मापदण्ड भी होता है। पहली पुस्तक में मैंने अपने जीवन के सच्चे, कड़वे और सुखद अनुभव बयां किये थे। यह बताते हुए कि जिंदगी संघर्षों और उतार- चढ़ाव से लबरेज होती है, इसलिये जीने का हौसला हमेशा रखना चाहिये। मुसीबत आने के बावजूद इस जिंदगी को जीते रहना ही बिंदास जिंदगी के शाब्दिक अर्थ को सार्थक करता है। बीते 16 साल बाद इसका दूसरा भाग लिखने के लिये सच कहो तो मैं मजबूर हो रहा हूँ... अपने पाठकों के साथ, अपने अनुभव साझा करने के लिये। अब भी मेरे जीवन का मकसद वही है -जियो तो बिंदास जियो... मगर इस पुस्तक के दूसरे भाग में आगे, एक शब्द जोड़ता हूँ- अतिविश्वास में नहीं। मेरे इस मिशन का कड़ुवा अनुभव यह है कि किसी अपने पर विश्वास करो तो इतना भी मत करो कि वो अंत तक तुम्हारा अपना बनकर रह सके, चाहे वो जीवन साथी हो, माँ बाप हो, संतान हो या इन सबसे बढ़कर कोई मित्र या सगा हो... समय के साथ सब पलटा भी खा जाते हैं, ये भूलकर कि समय ही एक दिन उनको अहसास कराएगा कि क्या तब वे सही थे या आज वे सही हैं।

मझधार में नाव कितनी ही क्यों न फंस जाए,
उसे किनारे लगाने का हौंसला तो रखना ही चाहिये।

शुभकामना संदेश

श्री दिनेश सोलंकी जी ने बताया कि उनकी आत्मकथा 'जियो तो बिंदास जियो' का भाग दो प्रकाशित हुआ है, सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। पत्रकारिता के साथ-साथ अभिनय संगीत तो जुड़ा ही है लेकिन एक अलहदा गुण भी है सद्भाव एवं ईमानदारी के साथ बनते कोशिश हर सहयोग को तत्पर।

हालांकि कुल जमा तीन मुलाकात हुई है मेरी उनसे। दूसरी और तीसरी परिवारिक विवाह समारोह में। पहली भेंट 2014 में जब मैं 6 माह के बेड रेस्ट पर गंभीर हालत में थी मिजाजपुर्सी के लिए घर आए थे, उसी दिन अपनी आत्मकथा 'जियो तो बिंदास जियो' की प्रति भी दे गए थे। 30.5.2014 तारीख उसी किताब से याद रही।

सन् 2014 से 2026 तक भले ही तीन प्रकार भेंट हुई किंतु उनके आग्रह अनुरोध आदेश से 24 अक्टूबर 2014 से ही 'प्रिय पाठक साप्ताहिक' में मेरा कॉलम 'जिंदगी किस्सों की' का सफर जो शुरू हुआ वह आज तक जारी है। निःस्वार्थ भाव से दूसरों को भी निरंतर सृजन करते रहने को प्रोत्साहित करने का गुण भी है दिनेश जी में। निश्चित ही दिनेश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। साथ ही एक अच्छे इंसान हैं, उनमें मानवता है। कोरोना काल की भयानक घड़ी में जब सगे-संबंधी परस्पर कतराते, छुपे बैठे रहे, उस भयानक घड़ी में हम दोनों पति-पत्नी की बीमारी में सहृदयता से मदद की। वहां अनमोल है।

इसलिए मुलाकातों में वक्त का हिसाब बेमानी होता है खास होता है आपसी सद्भाव, वह हमने दिनेश जी के व्यवहार में भरपूर देखा। आत्मकथा के दूसरे भाग की प्रतीक्षा है। यह तय है दूसरा भाग भी जीवन के विभिन्न अनुभवों, संघर्षों, आघातों एवं उपलब्धियां का बेबाक ब्यौरा होगा। बहुत-बहुत बधाई के साथ अनेकानेक शुभकामनाएं।

- नीता श्रीवास्तव

लेखिका

भाई सोलंकी जी,

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप 'अपनी आत्मकथा' लिख रहे हैं। इस प्रयास के लिए मेरी बहुत बहुत शुभ कामनाएं।

दिनेश सोलंकी महू नगर के प्रमुख पत्रकारों में स्थान रखते हैं। लगभग चार दशक से वे पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। उनके अनुभव की झलक पाठकों को इस आत्म कथा में देखने को मिलेगी। यह किताब अनेकानेक जानकारियों के साथ पाठकों को मार्गदर्शन देने वाली होगी।

भाई सोलंकी गत 25 वर्षों से नियमित रूप से 'प्रिय पाठक समाचार पत्र' भी निकाल रहे हैं। इस समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने समय समय पर हर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं पर प्रभावशाली ढंग से कलम चलाकर निर्भीकता से प्रकाश डाला है। आज के समय में लगातार समाचार पत्र निकालना आसान काम नहीं है। लेकिन उनका जुझारूपन तथा साहस उनको इस क्षेत्र में सफलता की मंजिल की ओर ले जा रहा है।

- ओम प्रकाश ढोली

वरिष्ठ पत्रकार एवं खेल समीक्षक

चिनार पार्क, किशनगंज, महू

अधिमान्य पत्रकार श्री दिनेश सोलंकी जी एक ऐसे कलमकार जिससे वो महू शहर की पत्रकारिता के केंद्र बिंदु रहे।

निर्भीज्ञ निष्पक्ष सटीक प्रामाणिक खबरों के लिय महू की पत्रकारिता में शीर्ष पर आसीन देश के नामी समाचार पत्रों में अपनी सेवाएं देने के बाद आज अपने स्वयं के समाचार पत्र प्रिय पाठक से समाचार सेवा प्रदान कर रहे हैं।

मेरे कुछ खट्टे कुछ मीठे अनुभव दिनेश अंकल जी के साथ रहे हैं, पर उनकी कलम की शक्ति और निष्पक्ष पत्रकारिता का में पूर्ण सम्मान करता हूँ। महू में आप पत्रकारिता के एक स्वर्णिम हस्ताक्षर है।

- पंडित कपिल शर्मा (काशी महाराज)

महू

प्रिय दिनेश सोलंकी,

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे चित्रकार हैं, गायक हैं, पत्रकार हैं, लेखक हैं, फोटोग्राफर हैं, एंटरपेन्योर हैं, संपादक तो हैं ही। एक साप्ताहिक अखबार के संपादक- प्रकाशक के रूप में उनकी प्रतिभा देखने को मिलती ही है।

दो दशकों तक महू जैसे स्थान से कोई साप्ताहिक अखबार नियमित रूप से प्रकाशित करना और उसे इलाके की धड़कन बना देना, कोई आसान बात नहीं थी, लेकिन दिनेश सोलंकी ने यह कार्य कर दिखाया है। आज महू इलाके में प्रिय पाठक साप्ताहिक का इंतजार वैसे ही होता है, जैसे कभी धर्मयुग पत्रिका का होता था।

जीवन ने कितने क्षेत्रों में उनकी सक्रियता है, यह जानना सुखद है। अचरज होता है कि कोई शख्स इतनी विविध जिंदगी जी सकता है। इतना सब कुछ होने के बाद भी उन में जबरन का लादा हुआ गाम्भीर्य नहीं है। वे पूरी तरह से सहज और सरल व्यक्ति हैं। मिलनसार हैं और हर किसी के लिए उपलब्ध हैं। ऐसे विविधता पूर्ण जीवन से लबरेज व्यक्ति हैं, से मित्रता किसी के लिए भी सौभाग्य हो सकता है।

मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

-डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

वरिष्ठ पत्रकार, फिल्म समीक्षक, इंदौर

'अतरंगी है मिज़ाज उनके शायराना अंदाज़ ज़ेहनी रुबाब रखते है
मसख़री है बातों में, मस्त -बेबाक़ क़िरदार ज़नाब लगते है'

मैं आपको बचपन से जानता हूँ क्योंकी मेरे घर से आपका घर कुछ सात या आठ मकान छोड़कर होगा।

महू में अगर पत्रकार के रूप मे मैंने पहले किसी व्यक्ति को देखा वो आप थे। जब राजनीति और सामाजिक क्षेत्र मे कदम रखा और अख़बार पढ़ना और समझना सीखा। तब से यही जाना की आप बेहद निर्भीक, निडर एवं मस्त मौला इंसान है।

जैसा की आप जानते है की मेरा फिल्मों का भी काम है। मैं आपको कई बार बोल चुका हूँ की आपकी जीवनी पर बहुत शानदार

फिल्म बन सकती है।

और अगर ईश्वर ने सब कुछ ठीक रखा तो मै स्वंय आपकी ज़िन्दगी पर फिल्म निर्माण करूँगा।

ईश्वर से प्रार्थना है की आप हमेशा निडर, निर्भीक एवं अपने निर्णयों पर सदैव अडिग रहे!

आपकी नई पुस्तक एवं नव दम्पति जीवन की हार्दिक शुभकामनायें बधाई।

- राजिक फर्शीवाला (भाजपा नेता)

राष्ट्रीय सलाहकार

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, भारत सरकार

"अपने दिल की घेराइयों से आपके लिए लिखना तो बहुत कुछ चाहता हूँ।

एक पुस्तक लिख सकता हूँ मैं आपके लिए, लेकिन यह पुस्तक आप लिख रहे है इसलिए अपनी कलम को संक्षिप्त कर रहा हूँ।

मस्त बेबाक... ज़िंदगी भी संगीत के आरोह अवरोह की तरह होती है कभी ऊपर कभी नीचे,

जीवन की राह में बहुत से अनचाहे चढ़ाव आते हैं उन्हें पार कर चलते जाना ही सही मायने में जिंदादिली है।

जिंदगी तब और खूबसूरत हो जाती है जब हम प्रत्येक क्षण को भरपूर जीते हैं जीवन में जो रस होता है उसको पूरी तरह से निचोड़ने की कला आनी चाहिए 'तभी जीवन खुबसूरत होगा'

प्रिय मित्र दिनेश कुछ ऐसा ही जीवन प्रतीत होता है आपका

- गुरदीप सिंग दीप

9827074074

"मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ है,ऐसे ही ऊर्जा से ओतप्रोत रहे। सकारात्मक सोच हमेशा ऊर्जावान के पास होती है यही आपकी पहचान है। धन्यवाद।

- मोना ठाकुर

आदरणीय दिनेश भैया, सप्रेम वंदे,

अपार हर्ष का विषय है कि आपके द्वारा आत्मकथा का भाग 1 प्रकाशित करने के पश्चात आत्मकथा भाग 2 प्रकाशित की गई है, इसमें आपने जीवन काल में खोज करके जो अनुभव प्राप्त किए हैं उनका दर्शन रहेगा।

'खोज' इस दो शब्द के अक्षर में ब्रह्मांड/सृष्टि का इतना बड़ा खजाना छुपा हुआ है कि अनादि काल से मानव जीवन के हर क्षेत्र में अपने पूर्वजों के अनुभव के आधार पर खोज करते हुए जीवन में शांति, समृद्धि एवं सफलता का मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयास करता रहा है और करता रहेगा। इसी तारतम्य में हमको महापुरुषों की ऐतिहासिक आत्मकथा के माध्यम से उनको जो अनुभव प्राप्त हुए है, उसी आधार पर हम निर्णय लेकर जीवन को सफल बनाने का प्रयास करते हैं।

अपनी स्वयं की खोज करके आत्मकथा को लिपिबद्ध करना,अपने जीवन के अनुभवों को कलम के माध्यम से पुस्तक के रूप मैं परिवर्तित कर आत्मकथा लिखना दुर्लभ कार्य है। आपके अनुभव से जो आत्मकथा प्रकाशित होगी निश्चित ही आने वाली पीढ़ियां, आने वाला भविष्य, आने वाले कर्णधार इस आत्मकथा के माध्यम से जीवन के कई क्षेत्रों में निर्णय लेकर सफल होकर स्वयं के जीवन को दैदीप्यमान कर सकेंगे।

हमारे दो महाकाव्य भी हमें बहुत कुछ सिखाते हैं।

रामायण के माध्यम से मर्यादा का पाठ सीखते हैं, किंतु वहीं महाभारत हमें यह मार्गदर्शन देती है कि अहंकार एवं लोभ के कारण कोई व्यक्ति मर्यादा का भी अपमान करें अर्थात स्वाभिमान पर प्रहार करे, तो उसे भी क्षमा नहीं किया जाना चाहिए। आपके द्वारा लिखी गई आत्मकथा का भाग 1 उससे अनेक अनुभव से जीवन के क्षेत्र में सुलभता का मार्ग मिलता है तथा निश्चित ही यह गौरव का विषय है एवं हमें भी गर्व है कि आपकी सुदृढ़ लेखनी के द्वारा जो भी अनुभव एवं निदान लिपिबद्ध होंगे निश्चित ही पाठक को दिशा दर्शन देंगे। हमारी शुभकामनाएं सदैव आपके साथ है, परमात्मा आपको प्रबल

शक्ति प्रदान करे।

जीवन के प्रति जो आपने चिंतन किया है,
आत्मकथा को लिपिबद्ध कर मंथन किया है,
जो भी इस सागर में डुबकी लगाएगा,
निश्चित ही वह अमृत कलश पाएगा,
शुभेच्छु

-नरोत्तम कुमार माहेश्वरी

बी.कॉम., एल.एल. बी. (ऑनर्स), एफ.सी.ए.
नगर सचिव (इंदौर), अखिल भारतीय लोकतंत्र सेनानी संघ,
अध्यक्ष -रोटरी क्लब ऑफ महू (वर्ष 2026-27),
ट्रस्टी : स्वर्ग मंदिर ट्रस्ट,महू

" क्या लिखूं उस अजीम शख्सियत के विषय में, क्योंकि अपने करीबी के विषय में लिखना बहुत ही मुश्किल होता है। चार दशक से भी अधिक समय हो गया भाई दिनेश सोलंकी के साथ यारी के। उनके चेहरे पर मैंने कभी गुस्सा नहीं देखा, इसी को कहते हैं जियो तो बिंदास जियो। सोलंकी जी की आत्मकथा का शीर्षक बिल्कुल समीचीन है और वे इस पर सौ प्रतिशत खरे उतरे हैं।

क्या खूबी नहीं है उनमें, वे तो बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। रंगमंच, रेडियो, फिल्म, टीवी आर्टिस्ट रहे। साथ में 45 सालों से पत्रकारिता करते हुए ख्यात पत्रकार, संपादक, प्रकाशक, 14 सालों से राज्य स्तरीय अधिमान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार भी हैं और शौकिया मधुर गायक, छायाकार भी हैं। लॉन्ड्री व्यवसायी में भागीदार हैं तो स्वभाव से मृदुभाषी, मिलनसार, सबको साथ लेकर अपना बनाने वाले हैं, यकीनन हरफनमौला है।

जीवन को भाई दिनेश जी सोलंकी ने सही मायने में बिंदास तरीके से जिया है। सुख में कोई घमंड नहीं बल्कि समर्पित भावना लिए रहते हैं तो दुःख में सदा मुस्कुराने का नाम है दिनेशजी का। प्रिय पाठक के यशस्वी संपादक के रूप में भाई दिनेशजी ने महू अंचल में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। यही कारण है कि प्रिय

पाठक समाचार पत्र में देश के कोने-कोने से साहित्यकार अपनी कविताएं और लेख भेजते हैं। सभी लेखकों को पर्याप्त स्थान देते हैं। संगीत और लेखन भाई की रग-रग में समाया हुआ है। 'जियो तो बिंदास जियो' उनकी दूसरी आत्मकथा है जो बेशक पठनीय और मनभावन होगी। बाबा महाकाल से भाई दिनेश जी सोलंकी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं कि उनके लेखन में और भी नित नई धार आए।

बकौल पंजाबी कवि जसवंत सिंह बिरदी के इन शब्दों में
कोई पिए तो प्यास लगे और कोई पिए तो प्यास बुझे।

- दिनेश तिवारी उपवन

लेखक, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक साहित्यकार,
अध्यक्ष, विद्योतमा साहित्य फाऊंडेशन,
मीडिया प्रभारी, अ भा शाइनिंग क्लब बड़नगर,
आकाशवाणी, दूरदर्शन कवि एवं मंच संचालक
पता - 110, गोयल एवेन्यू, निपानिया इंदौर, 452010

अपनी पैनी कलम से सच को सम्मुख लाने का साहस दिखाने वाला पत्रकार... उस व्यक्ति या व्यक्तित्व के लिए लिखना तब ज्यादा आसान नहीं होता है, जब आप उस व्यक्ति को बखूबी जानते हो। विशेषकर यदि कोई व्यक्ति कलाकार हो, लेखक हो, रुचि संगीत में होते हुए अभिनय में भी हो और जिसने जिस क्षेत्र में कदम रखा, असीम सफलता प्राप्त की हो। ऐसा ही विराट व्यक्तित्व हैं, दिनेशजी सोलंकी का। आप सामाजिक संदर्भ के प्रत्येक पहलुओं, विधाओं में न सिर्फ रुचि रखते है, अपितु पूरी तन्मयता के साथ उसे वास्तविकता के धरातल पर भी क्रियान्वित करते है।

मेरा इनसे 1990 के दशक से परिचय है। आज भी मुझे अच्छे से याद है जब दिनेश भैया दैनिक भास्कर के बाद, नवभारत के पत्रकार हुआ थे। तब महू में भास्कर और खासकर नवभारत पढ़ा ही इसलिए जाता था कि उनकी पैनी नजरें ऐसी खोजी खबरें लेकर आती थी जो अन्य समाचार पत्रों से बिल्कुल अलहदा होती थी। तब इनके सांघी

स्ट्रीट स्थित किराए के घर पर अनौपचारिक रूप से जाना शुरू हुआ था। तब दिनेश भैया ने उनकी पत्रकारिय लगन की एक झलक मुझे स्पेशल रजिस्टर में दिखाई थी। नाम था - मेरी कलम, उन्होंने एक संग्रहरूपी बहुत ही सुंदर एलबम भी बनाया है जिसमें उनके नईदुनिया, दैनिक भास्कर, नवभारत आदि समाचार पत्रों में बतौर प्रतिनिधि रहते हुए छपी रिपोर्ट्स और स्वतंत्र कलम लिए हिंदुस्तान, धर्मयुग, जनसत्ता, मुक्ता, सरिता, सच्ची कहानियों की कतरनें सहेजी हुई है।

आज जबकि नामी समाचार पत्र भी प्रकाशन की संख्या को लेकर परस्पर-प्रतियोगी बने हुए है और सोशल मीडिया के बढ़ते आकर्षण ने समाचार पत्रों के प्रकाशन को तो और भी प्रभावित किया है। ऐसे परिदृश्य में भी विगत 25 वर्षों से वे प्रिय पाठक के नाम से सुनहरी सफलता से स्वयं का समाचार पत्र प्रकाशित कर रहे है। महू और उससे संबद्ध शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसे इस समाचार पत्र के पढ़ने की आतुरता नहीं रहती हो।

कला, साहित्य, संगीत, शिक्षा, समाज और राजनीति के साथ ही महू के इतिहास से लेकर प्रासंगिक रूप से तिनके-तिनके की सविस्तार हलचल उनके अखबार में पूरी सच्चाई के साथ छपती है। महू से संबद्ध हर समस्या को वे अपनी पत्रकारिय कलम से पूरी ईमानदारी से उठाते है। अपने पेशे के प्रति वे इतने जागरूक और गंभीर है कि किसी भी तरह का विषय हो यदि उन्हें लगता है कि ये महू शहर के हित में नहीं है तो वे पुरजोर तरीके से उस बात को, उस समस्या को अपने समाचार पत्र के माध्यम से पूरे विरोध के साथ करते है फिर भले ही वो कोई बड़ा व्यक्ति हो या जनप्रतिनिधि और यही सबसे प्रमुख आधार बना जब उन्हें वर्ष 2015 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रतिष्ठित राहुल बारपुते आंचलिक पत्रकारिता सम्मान मिला। सार स्वरूप मेरा ऐसा मानना है कि पत्रकारिता के पेशे में दिनेशजी वसुंधरायी व्यक्तित्व है जो सच को सम्मुख लाने का न सिर्फ साहस दिखाते है, अपितु उस बाबद यथा अंतराल संबद्ध जनप्रतिनिधि, शासन प्रशासन का ध्यान भी बटाएं रखते है। बहुमुखी प्रतिभा से सराबोर अलहदा व्यक्तित्व की आत्मकथा का प्रकाशन स्वागत योग्य निर्णय है। निश्चित ही इनकी दूसरी आत्म कथा में कुछ नया अनुभव मिलेगा, अग्रिम बधाई, संग अशेष शुभकामनाएं।

- दीपक विभाजन नाईक 'रक्तदीप'
विभाकर विहार 81, सिद्धीपुरम कॉलोनी,
पश्चिमी रिंग रोड, इंदौर-452009

जियो तो बिंदास जियो

मैं वैसे तो कुछ नहीं,
साधारण मानुष ही रहा और आज भी हूँ,
दिन बढ़ते गए, मैं भी चलता गया,
मालूम नहीं था कि बढ़ता जा रहा हूँ
या घटता जा रहा हूँ,
बीच में कुआं आया या खाई आई या आया पहाड़
मैं तो बस चलता ही गया
और आज भी चलता चला जा रहा हूँ...
मंजिल से मुझे मतलब नहीं,
बस हर साफ सुधरी सीढ़ी देखते ही चढ़ जाता हूँ!

पहली किताब से दूसरी किताब के बीच हुआ अजीब संयोग :

पहली आत्मकथा पुस्तक के प्रकाशन के समय मैं विवाहित था,
दूसरी पुस्तक लिखते समय मैं कुँवारा हुआ और
पुस्तक छपते-छपते मैं फिर से विवाहित हो गया।

मेरी इस आत्मकथा के तीन प्रमुख पहलू हैं
पहला पारिवारिक जीवन की घटनाएं, अनुभव
दूसरा पत्रकारिता और संबंधित मीठे-कड़वे अनुभव
तीसरा जीवन से जुड़ी उपलब्धियां, घटनाएं, परिणाम

इन शब्दों के साथ कि -
''जिन्दगी, जीवन में कुछ भी गुल खिला सकती है
कांटें भी चुभा सकती है और फूल भी बरसा सकती है''

अनुभव नहीं था कि जिन्दगी का सफर भी
रेलवे स्टेशनों की तरह मुसाफिर बदलता है
1984 से चला हम-सफर का साथ
39 साल बाद... ऐसे स्टेशन पर आकर थमा
कि मैं देखता ही रह गया और वो उतरकर अपरिचितों की
तरह बिना मुड़े साथी चला भी गया
ये कैसा सफर था..!
विश्वास या अविश्वास से भरा
जो पहेली बनकर चौंका गया
लगता था जैसे कोई बंधन था ही नहीं
लगा जैसे अजनबी था मैं उसके लिये
इसलिये तो न आह निकली, न वाह!
जिंदगी की लम्बी पारी को विदा कर गई..
हम अकेले पहले भी थे और फिर अकेले हो गए
क्या सचमुच रिश्तों की डोर
इतनी भी कच्ची होती है कि झटके में टूट जाए...!
जैसे गुंथी माला के मोती बिखर जाएं..
शायद मेरी शराफत/गलती या नासमझी का
सिला मिला है मुझे...

अनबूझ पहेली का दूसरा पड़ाव...

मेरा अकेलापन ज्यादा नहीं टिका
उसी स्टेशन से नया हमसफर भी जुड़ गया,
शेष जिंदगी का साथ निभाने का वादा लिये
न उम्र की चिंता, न दुनिया की परवाह
मेरा हाथ विश्वास के साथ थाम लिया
मन में चली आ रही रिक्तता को
प्यार से भर अधूरेपन को किया दूर
अब सोचने में आता है कि

पूर्वार्ध सही था या वर्तमान सही है
या और अब उत्तरार्ध कितना सही होगा!
ये भी किसी पहेली से कम नहीं है
बिंदास जिंदगी का मेरा मकसद
कितना सार्थक होगा,
ये अब भी नहीं सोच पा रहा हूँ लेकिन,
नया हमसफर प्यार से ओतप्रोत है
वो कैसे नसीब से जुड़ गया है....!
ये भी मेरे समझ से परे रहा,
बस एक आकर्षण था जिसमें दोनों
बंधते चले गए और साथ हो लिये,
मगर दिल-दिमाग में ये प्रश्न गूंज रहा है
कि अब ये सफर कहां तक चलेगा या थमेगा..
ईश्वर ही जानें, आगे क्या होगा...
बस यही कि जो होगा, अच्छा ही होगा
उम्मीदें जवां हैं तो कल का सूरज बेहतर होगा
ज्यादा सोचना आता नहीं मुझे
बस इतना जरुर जानता हूँ
कि उस ऊपर वाले का मुझ पर
हमेशा आशीर्वाद है,
जिनके हाथों मेरा नसीब बनता है...
इसलिये सफर चाहे जैसा हो
कोई साथ चले, छूटे या जुड़े,
वो तो बिंदास चलता ही रहेगा
क्योंकि जिंदगी तो जीना है
भले ही वो चार दिन की हो
या सौ साल की क्यों न हो
इससे क्या फर्क पड़ता है..!

****

संक्षिप्त में...
जियो तो बिंदास जियो (भाग 1) की खास बातें

- कैंसर पीड़ित बालिका रानू पंवार को लेकर आर्थिक सहयोग और किया था सांस्कृतिक कार्यक्रम
- राष्ट्रीय सेवा योजना ने कॉलेज लाइफ में बदला था मेरा जीवन
- जब गृह मंत्री सेठी के सामने किया था महू को लेकर व्यंग्य नाटक
- छात्र संघ चुनाव में मेरा हुआ था अपहरण, कॉलेज में दो बार अध्यक्ष और एक बार सचिव का चुनाव लड़ा
- जब बेटा गिरा था खाई में, 1996 में मुझ पर हुआ था जानलेवा हमला
- हस्तलिखित समाचार पत्र के शौक ने बनाया पत्रकार
- जब घने जंगल में मिला था वनमाफिया, बोला था यहाँ लाश के पते भी नहीं मिलते
- जब साम्प्रदायिक दंगों के चलते बीच जाकर की थी फोटोग्राफी
- जब टीआई ने आधी बोतल शराब पिलाकर सोचा था खबर नहीं छाप पाऊंगा
- राजीव गांधी की हत्या की रात इंदौर में हुई तोड़फोड़ के बीच जाकर की थी फोटोग्राफी
- जब दिलीप कुमार के बचपन का अभिनय करने से दुर्भाग्य से चूका था
- जब रोडवेज का एक कंडक्डर मुझे मारने के लिये 6 माह तक तलाशता रहा था
- जब रेलवे पुलिस अफसर के खिलाफ छापने पर चला था कोर्ट केस, बाद में बने मित्र
- जब सैशिल्स आयलेन्ड में नौकरी करते हुए बनाकर बेचे थे फिश समोसे
- जब चम्बल के डाकुओं के इलाके में भूल से जा पहुँचे हम तीन दोस्त
- जब फिल्म सावधान के दौरान अभिनेता परिक्षित साहनी की फटी पेन्ट की थी सिलाई
- छावनी परिषद, बिजली विभाग और रोडवेज के खिलाफ किये थे जनांदोलन
- महू प्रेस क्लब अध्यक्ष बनने पर किया था जनहित में अनशन आंदोलन

जियो तो बिंदास जियो

आज मनुष्य के पास नाना प्रकार के तनाव है जिसके चलते वह अपनी मनचाही जिंदगी नहीं जी पाता है। कोई बहुत अमीर है तो उसे और पैसा बनाने की चाह तनाव में डाल देती है तो कोई बहुत गरीब है तो वह दो समय के भोजन की जुगाड़ में एक-एक पल तनाव में गुजारता रहता है। इस तरह आम आदमी स्वयं को न सही लेकिन अपने परिवार को सुकून की जिंदगी के प्रयास में ही तनाव में रहता है तो कोई घर-परिवार के लिये कर्ज पे कर्ज लेकर उसे चुकाने में जिंदगी बसर कर डालता है। इन सबसे निपटने का एक ही उपाय होता है कि दिमागी संतुलन और शारीरिक स्वास्थ को बनाए रखना, जिसके प्रयास ज्यादातर मनुष्य नहीं कर पाते हैं और वे तनाव में हतोत्साहित होकर समय से बहुत पहले अपनी उम्र को बूढ़ा बना जाते हैं। 50 वर्ष के बाद मेरी बढ़ती उम्र का पता मुझे तब ही चलता रहा जब-जब जन्मदिन मनाने की बात होने लगती थी फिर बैठकर मैं उंगुलियों में साल गिनते हुए पाता था कि मैं किस उम्र की दहलीज पर कदम रख चुका हूँ लेकिन इसके बाद भी कभी उम्र का रोना मेरे लिये अवरोध नहीं बना, क्योंकि में दिमागी सुकून और शारीरिक स्वास्थ के प्रति हमेशा सजग रहा। आज भी महू के माल रोड पर घूमने की चाह बनी रहती है तो हलका व्यायाम अक्सर कर लेता हूँ ताकि शरीर में स्फूर्ति बनी रहे।

हंसी-मजाक की बातें, सोशल मीडिया की रीलों, टीवी पर हास्य फिल्मों से लेकर हॉरर, सस्पेंस की फिल्में और संगीत के आनंद में कुछ पल गुजार लेने के बाद जब अपने अखबार या फिर व्यावसाय पर ध्यान देता हूँ तो सप्ताह, महिने और साल कब निकल जाते हैं इसका अंदाज नहीं होता है। मौत तो एक दिन आनी है और मैं कोई बिरला नहीं कि मैं मरुंगा नहीं, इसलिये मरने का रोना किसलिये... जिंदगी जो चल रही है उसके लिये हंसते-खेलते रहना जरुरी है। युवा वर्ग के साथ भी अपने आपको बनाए रखो ताकि उनके साथ रहते हुए आप भी उर्जावान रहें।

हंसते-खेलते ही आप तनाव से दूर रहेंगे और जिंदगी में आने वाले उतार-चढ़ाव के लिये आपका मन मस्तिष्क तरोताजा रहेगा... इसलिये जियो तो बिंदास जियो... मर-मर कर जीना भी, कोई जीना होता है!

कितना बड़ा अंतर... संक्षेप में समेटना मुश्किल

मेरी टाइमपास आत्मकथा के पहले भाग में, मैं विवाहित था, पिछले डेढ़ साल से किताब का दूसरा भाग लिखते-लिखते लाइफ में ट्विस्ट आया और मैं अचानक कुँवारा हो गया और अब यह किताब बनते- बनते मैं फिर से विवाहित हो गया..! और छपते-छपते विवाह की पहली वर्षगांठ भी मना ली। याने जीवन में कुछ भी हो सकता है जो अनसोचा हो वो भी सम्भव हो जाता है। इन चंद पंक्तियों की व्याख्या यह है कि पहला विवाह मेरे प्यार की उत्पत्ति थी, फिर से कुँवारा होना, किसी दुर्घटना से कम नहीं था और फिर परस्पर प्यार से ही दोबारा विवाहित हो जाना किसी चमत्कार से कम नहीं है। सिर्फ इतना कहूँगा कि विचारों में असमानता अंतरंगी दूरी का सबसे बड़ा कारण बनता है। मेरे अतीत के सफर में भी हम दोनों ही एक- दूसरे की नजर में दोषी होकर गलतियों का ठीकरा एक दूसरे पर फोड़ते रहे, लेकिन हम दोनों में सही कौन, गलत कौन... इसका फैसला हम दोनों के बीच कैसे होता, जबकि बेटे- बहू भी लम्बे समय तक मूकदर्शक या गलतफहमी में बने रहे। बेटों के इन शब्दों के साथ कि 'जब साथ नहीं रह सकते तो अलग ही हो जाओ..'। दो टूक उनके लिये कहना सरल तो था मगर ऐसा करना मेरे लिये आसान नहीं... क्योंकि शादी के बाद से यह कल्पना नहीं होती थी कि अलग हो जाऊं! वो भी तब, जिससे मैंने शादी प्यार करके की हो। ऐसे में साथ छोड़ देना जैसा शब्द कानों में चुभता था। फिर ऐसा हो, तो भी अपने पास खोने को बहुत कुछ था... पत्नी... बच्चों के अलावा एक घर, जिसे बनाने में मेरा भी खून-पसीना लगा है, बाग -बगीचे जिनकी रखवाली भी कभी-कभी मैं करता रहा, वो मोहल्ला और वो सारे विकास जिसमें मेरा अहम योगदान रहा है... ये सब कैसे भूल सकता था।

> ***अकेले जीवन जीना कोई मजाक नहीं है दोस्तों,***
> ***साथी बेहतर हो तो जीवन भी सरल होता है,***
> ***पारिवारिक जीवन में जिम्मेदारियां वहन करना,***
> ***उतना ही कठीन और सुकून भरा होता है***

मैं अकेला ही चला था...
ऐसा लिखते थे एड. मोहनलाल शर्मा

शहर के बुद्धिजीवी वकील स्वर्गीय मोहनलाल शर्मा लम्बे समय तक मेरे अखबार साप्ताहिक प्रिय पाठक के लेखक रहे हैं। प्रिय पाठक के नए वर्ष में प्रवेशांक के आकलन में एक बार उन्होंने मेरी संघर्षमयी जिंदगी से परिचित होते लिखा था कि ''मैं अकेला ही चला था जानिब ए मंजिल, मगर लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया''..। ये शायरी के शब्द मेरे लिये बहुत सटिक थे। मुझे लगता है कि संघर्ष करते रहना मेरी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। बिना मेहनत के मुझे प्रतिफल मिलता नहीं, न मैं उसकी आस लगाता हूँ... याने मैं सोचू कि रास्ते में पड़ा हुआ नोटों का सूटकेस मिल जाए, या सोचूं कि ब्लेकमेल रिपोर्टिंग करके नोट कमा लूँ... या अचानक कोई लॉटरी लग जाए... ये मेरे लिये आज भी सम्भव नहीं होता है, जितनी मेहनत करता आया हूँ उसका उतना ही प्रतिफल मिलता रहा है, बल्कि कई बार भाग्य से अधिक मिलता रहा है। लोग चर्चाओं में रहने के लिये समाजसेवा के बहाने, नेतागिरी करने, प्रतिष्ठित होने में पैसा पानी की तरह बहाते हैं, लेकिन मुझे मेरी ख्याति बिना व्यर्थ पैसा बहाए ही मेहनत और जन समर्पण से हमेशा मिली और लम्बे समय से लेकर आज भी मैं अपनी कलम से और अपनी प्रतिभा के बल पर ही अपनी पहचान बना पाया। उसमें भी कई बार नाव हिचकोले खाती रही मगर हिम्मत हारना मैंने सीखा नहीं, बस यही मेरी खासियत रही।

दो विवाह उपरांत मेरे अनुभव से निष्कर्ष

जिंदगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मकां...वो फिर नहीं आते...ये गीत के बोल आनंद बक्षी जी ने बहुत संजीदा होकर लिखे होंगे। और ऐसा बहुतों की जिंदगी में अलग-अलग अंदाज में घटित भी होता होगा। मेरा मानना है कि जब किसी के हमसफर का साथ अचानक परिस्थितिवश छूट कर सात जन्मों की किवदंती को झूठा साबित कर देता है तो उसमें किवदंती का नहीं, हालात का कसूर होता है। इसलिये मैं यह मानने लगा हूँ कि ''जिंदगी अकेले रहकर ताउम्र जीना और किसी मित्र या जीवन साथी के साथ जीना, दोनों ही के बहुत अलग-अलग मायने और अलग-अलग किस्म के अनुभव होते हैं''। अकेला जीवन जिया तो जा सकता है लेकिन उसमें त्याग, जिद और बलिदान के सहारे ही हिम्मत बंधी रहती

है, फिर भी बुढ़ापे में बिमारी, अकेलापन और सगे संबंधी साथ न हो या दूर दूर हों तो निश्चित रुप से ऐसा अकेलापन उम्र को काटने लगता है और आखरी तक दमदारी से जीना ही चुनौति और गहरा प्रश्न बनकर रह जाता है, जो मन को सुकून, तृप्ति नहीं दे सकता और न ही मन की रिक्तता को भर सकता है।

किसी हमसफर (पति-पत्नी) के साथ जीने के भी अपने तरिके और अनुभव होते हैं। इसमें पहला विकल्प यह है कि हमसफर एक दोस्त की तरह जीता है। उसकी अच्छी बातों से तो जीवन सहज निकल सकता है लेकिन उसकी किसी कमजोरी, आर्थिक स्थिति से बिगड़ते हालातों, बुरी आदतों या असहज वार्तालाप में या तनावपूर्ण बातों से बहुत जल्द सफर बोझ बनकर रह जाता है, जिसे ढोते रहना एक मजबूरी बन जाती है।

दूसरा विकल्प, हालातों से सामना न करते हुए ऐसे सफर का अंत करना यानी संबंधों का विच्छेद..! जिसे आज की भाषा में ब्रेकअप कहा जा सकता है।

तीसरा और आखरी विकल्प है जीवन साथी के साथ ही रहते हुए अच्छे बुरे हालातों से समझौता करके अंत तक का सफर बिताना..। ये आम तौर पर भारत में होता रहता है इसमें इच्छाओं, उम्मीदों और सपनों को तिलाजंलि देनी होती है। ये सफर भी कम काँटों वाला नहीं होता है, बशर्ते पटरी पर गाड़ी दोनों के विचारों से मेल खाकर या एक पक्ष के चुप रहकर आगे बढ़ रही हो। अन्यथा काँटों भरा ऐसा सफर या तो सहन करके, एक दूसरे को समझा बुझाकर, या एक तरफा मौन धारण करके भी चलाया जा सकता है। लेकिन ऐसा सफर रसविहीन बनकर रह जाता है। समझदार या पारिवारिक बंधनों से बंधे लोग जैसे-तैसे साथ निभा जाते हैं और अड़ियल लोग आ बेल मुझे मार की तर्ज पर ता-जिंदगी मनमर्जी से चलते रहने के आदी हो जाते हैं, फिर जीवन साथ चले या एकांगी, स्वर्ग बने या नरक बने, उन्हें दिखावे के तौर पर फर्क नहीं पड़ता, भले ही भीतर ही भीतर जिंदगी घुटन भरी क्यों न रह जाए।

“ *तू चल तो मैं भी साथ खड़ा हूँ तेरे,*
तू सम्हल तो सहारा लिये साथ खड़ा हूँ तेरे
कहीं ऐसा न हो कि तुम जानबूझकर गड्ढों की ओर
बढ़ रही हो और मुझसे ये आस है कि
मैंने आँखों पर पट्टी बांध रखी है...! ”

हरेक के दाम्पत्य जीवन में उतार चढ़ाव आते हैं..

पति -पत्नी का जीवन सफर एक साइकल के दो पहिये समान जरुर होता है जो साथ-साथ चलते हैं। लेकिन राह में गड्ढे या उतार चढाव आते हैं... या अनायास साइकल पंक्चर हो जाती है तो साथ- साथ चलने वाले पहिये लड़खड़ा जाते हैं, जो समझदार या लाचार होते हैं वें साइकल को मरम्मत कर सम्हाल लेते हैं, वरना अड़ीबाज लोग साइकल को भंगार में बेच पैदल अपने- अपने रास्ते पर चले जाते हैं।

अनुभव और स्मृतियों के साथ आत्मकथा का दूसरा भाग...

मैं अपनी पिछली किताब जियो तो बिंदास जियो के कुछ प्रसंगों का इस भाग में केवल संकेत दूंगा.. उसे कहीं-कहीं, वहीं दोहराऊंगा जहाँ उसकी जरुरत समझूंगा। यह अक्षरशः सही है कि हरेक की जिंदगी में उतार-चढ़ाव आते हैं। कुछ मेरी लाइफ स्टाइल भी मेरे संग-प्रसंगों के अनुसार अलग तरह की रही है जो किसी-किसी के जीवन में ही आ पाती होंगी कि आप विवाहित होकर अचानक विवाह-विच्छेद से कुंवारे हो जाओ और ढलती उम्र में दूसरा विवाह कर लो और वह भी उम्र के बेहद अंतर के साथ, तो इसे पढ़कर/जानकर पाठकों की आँखें चौड़ी होना भी स्वाभाविक हैं। जो लोग भी मेरे बारे में दूसरों के मुख से सुनते है या मुझसे सच जानते हैं तो वे मेरी पहली शादी से विवाह विच्छेद होने का वाकया सुनकर दुखी हो जाते हैं, तो कुछ आश्चर्य से जड़वत हो जाते हैं तो कुछ ऐसा होना गलत नहीं मानते हैं..। एक कॉमन शब्द सभी के मुख से निकलता है - अरे इस उम्र में विवाह विच्छेद..! मैं क्या बोलूं! यही कि हाँ, ऐसा मैंने भी नहीं सोचा था...सब ईश्वर की लीला है और ईश्वर ने अब जो नई राह मुझे दी है उसे एक बार फिर शेष जिंदगी जीने के लिये स्वीकारुंगा..पैसा होना या न होना, मुझे आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता... जिंदगी भले ही आर्थिक भंवर में फंसी हो फिर भी पीछे नहीं हटूंगा... चाहे कितने भी तूफां और क्यों न आ जाएं..!

एक गीत मैं हमेशा गाता रहा हूँ -

निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है
दीये की और तूफां की..

एक बार फिर तूफान में घिरी मेरी कश्ती नए साथी के साथ किनारा खोजने निकल पड़ी है....।

मेरे जीवन की किताब हमेशा खुले पन्नों की तरह रही..

मैं अपने बारे में कहूँ कि यदि मेरे स्वभाव में चेहरे पर चमक और मुस्कराहट मिली है, मन में चंचलता है, दिल भावुक और संवेदनशील है तो आप बताईये इसमें परिवर्तन लाना कैसे मुनासिब है! लेकिन इसे बदलने की कवायद कोई करे तो वो मेरे लिये चाहकर भी असहज होता था। फिर मेरे लिये बहुमुखी प्रतिभा वाले स्वभाव का होना भी उसी ईश्वर की देन है जिसके चलते मुझे पत्रकारिता के साथ साथ ऐसी- ऐसी फील्ड मिली कि अभिनय के लिये रंगमंच, आवाज के लिये रेडियो, कला के बल पर टीवी और फिल्म में काम करने के उज्जवल अवसर मिले और अब बीते कुछ बरसों से गायकी... ये हुनर भी 50 साल की उम्र से निखर कर सामने आया। अब यह स्वाभाविक है कि इन सब फील्ड में परिचित और अपरिचितों से सामना होता है। हंसी मजाक, मस्ती, अपनत्व, स्नेह, सभी भावों का मिश्रण मिलता है। आपसी विचारों के मिलते ही कुछ देर के लिये किसी से दिल लगे या मनोरजंन होना भी उसमें समाहित होता है, ऐसे में अपने आपको सम्हालना कई बार मुश्किल हो जाता है। इसलिये किसी-किसी के साथ गहरे दोस्ताना संबंध भी बने। फिर भी ये भान मुझे हमेशा रहता था कि मेरी एक पत्नी है, बच्चे हैं और बेटियों की तरह दो बहुएं भी हैं, इसलिये अन्यत्र संबंधों की गहराई के मामले में अतिरेक से दूर ही रहता था।

> “ *कोई सहारा जिंदगी का*
> *सबसे बड़ा सम्बल होता है,*
> *लेकिन मुझे सहारे के नाम पर*
> *अपनों से छल ही मिला है* ”

पिछले दस सालों से सफर कुछ इस तरह से चला

मैंने स्कूली लाइफ को केवल पढ़ाई से नाता रखा और बेहद सीधेपन स्वभाव से दिन व्यतीत किये। मगर कॉलेज लाइफ इसके उलट रही, आठ साल (कामर्स

और विधि) मेरे जीवन के बदलाव के साथ बेहद खुश मिजाजी से गुजारे। अच्छे दोस्तों का साथ मिला जिनके संग जीवन के पल हंसते मुस्कराते गुजारे। पोस्ट ग्रेजुएश्न और लॉ के बाद ही विवाह किया। विवाह हुआ तो शुरुआती दिनों में ही संघर्ष से सामना हुआ लेकिन फिर भी हिम्मत के साथ हम दोनों आगे बढ़े। कॉलेज लाइफ के दिनों से दीवार पर लगने वाले हस्तलिखित अखबार के माध्यम से पत्रकारिता शुरु हुई।

सच्ची पत्रकारिता का जुनून दिल दिमाग पर कायम रहता था। 27 साल की उम्र में अपनी पसंद से विवाह किया था। बच्चे हुए तब भी अच्छे पलों की कोई कमी नहीं रही। किराये के कमरों से निकलकर अपने बने घर में पहुँचने के लिये संघर्ष की लम्बी कहानी रही।

कुल मिलाकर सब कुछ अच्छा ही चलता रहा, पत्नी संग नोक झोंक होती रही, जो लगभग सभी पति-पत्नी के साथ होती है। लेकिन पिछले 10-12 सालों से बढ़ते तनावों ने मन में अभाव पैदा कर दिये। फिर धीरे धीरे महसूस हुआ कि गाड़ी पटरी से उतरने लगी है।

मैं कहूं कि मेरी वजह से या उसकी वजह से...ये साथ रहते हुए कभी तय नहीं हो पाया। क्योंकि मुझे कई मामलों में लगता था कि मैं सही हूँ मगर उसकी नजरों में, मैं शायद गलत ही रहा।

सच यह भी था कि मुझे ऐसी जिद पसंद नहीं थी जो खीज का अहसास कराए, बड़े -छोटे होने का अहसास कराए, पारिवारिक रहन-सहन में अंतर बताए। लेकिन मुझे 55 साल के बाद लगता था कि हमारा उत्तरार्ध का जीवन बोझू और दमघोटूं होता जा रहा है, इसका पटापेक्ष ससुराल पक्ष और मेरे बेटे -बहू भी नहीं कर पा रहे थे। इसके बाद भी कभी ये दिल में ख्याल कल्पना से भी नहीं आता था कि जीवन साथी से दूर हो जाऊं या उसे ही बदल लिया जाए..। क्योंकि ऐसा करने के लिये मेरे पास न तो ऐसी सोच थी, न वो जोश- जज्बा था और न ही धन दौलत थी...!

“ *जिसके संग सपने संजोये थे*
साथ चलने के लिये
मुझे पता ही नहीं चला साथी की
असली दरकार क्या है..! ”

पत्रकारिता में जेब से अक्सर पैसे लगे... मगर सम्मान खूब पाया

पत्रकारिता में गलत ढंग से पैसा कमाया नहीं, उल्टे बहाया भी बहुत। कौन विश्वास करेगा कि 1983 में दैनिक भास्कर में डेस्क पर काम करने के लिये मुझे सिर्फ 300 रुपए पारिश्रमिक बतौर महिना मिलता था और महू ब्यूरो चीफ बनने पर 400 रुपया महीना। इसके बनिस्बत अखबार का प्रसार मेरी खबरों से बढ़ता था और फायदा एजेन्ट को मिलता था जो 40 प्रतिशत तक कमीशन पा लेता था। मुझे बदकिस्मती से दो एजेन्ट भी ऐसे मिले जो मेरी न्यूज के प्रभाव से अपनी प्रसार संख्या बढ़ाते थे, उनका कमीशन बढ़ता था और खूब विज्ञापन का लाभ पाते थे। मतलब के लिये सेठों से अच्छे संबंध भी बनाते थे और पीठ पीछे जहर उगलना भी नहीं छोड़ते थे...बावजूद पत्रकारिता का सिलसिला मुझे शोहरत और इज्जत तो दिला पाया, लेकिन पैसा मुझसे दूर-दूर भागता रहा। इसलिये मेरी अपनी जिंदगी तो फक्कड़पन से ही चलती रही और शायद यह आम लोगों की नजरों में मेरी कमजोरी ही थी कि मैंने पत्रकारिता का बेजा फायदा या लाभ नहीं लिया। पीत पत्रकारिता से नफरत थी क्योंकि मेरी रगों में ईमानदारी का खून हरिशचंद्र की तरह स्वभाव वाले मेरे पिता का जो बह रहा है। लेकिन ईमानदारी और निष्पक्ष पत्रकारिता का सुकून भी मिला। सन् 2015 मेरी पत्रकारिता के लिये सुखद संदेश लेकर आया जब मैं मध्यप्रदेश शासन की ओर से इंदौर आंचलिक पत्रकारिता के लिये राहुल बारपुते सम्मान के लिये चुना गया। मेरे पत्रकारिता जीवन के इस खुशी के अवसर को आप पुस्तक के अंतिम पन्नों पर पढ़ेंगे।

शायद अच्छी कमाई नहीं होना भी अलगाव का कारण रहा...

आज की पत्रकारिता का उद्देश्य अलग हो गया है जिसमें पैसा गौण हो गया है। अब खोजबीन पत्रकारिता और अनुभव को बिना किसी मतलब से इज्जत नहीं दी जाती...पैसा कमाओ और पैसा दो, ये बड़े दैनिक अखबारों और इलेक्ट्रीनिक चैनलों की नियती बनती जा रही थी, ऐसे में किसी दैनिक अखबार में काम करना मेरे लिये मुश्किल हो चला था और इलेक्ट्रिक चैनलों में काम करने का मन शुरु से ही नहीं था। शायद एक बड़ी वजह यह भी थी कि मैं बीते समय में अपनों की

नजरों में कमाऊपूत नहीं रह गया था। पत्रकारिता में पैसा नहीं बना पाया जबकि प्रलोभन अनेक मिलते थे, मगर दिल गंवारा नहीं करता था। इस तरह मुझे महसूस हुआ कि पैसा न होने के कारण मेरी लाइफ पार्टनरशिप में इज्जत कम हो चली थी। क्योंकि पार्टनर को तो उसके व्यावसाय में पैसा बरसता ही रहता था, मगर उसके मुकाबले मुझे नहीं मिलता था।

शायद स्वभाव में ऊँच- नीच का अंतर भी पैसा ही ला रहा था। फिर भी हम पैसों का दर्द भूल कर मस्ती की जिंदगी को ही अपने जीने का आधार बना रहे थे। लेकिन पार्टनर संग आखरी सफर में यही लगने लगा था कि आखिर कब तक सहूं या वो मुझे कब तक झेलें.., ये उलझन दोनों ओर से बढ़ती जा रही थी, जिसका अंत नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में जब कभी भी मेरा मन उचटने लगता था, तो फिर जो मन कहता था वह करने लगता था.. जैसे कभी चंद दोस्तों के साथ हंस बोल लेना, स्टार मेकर पर गीत गाकर मन बहला लेना, गीतों के आयोजनों में भाग लेना, तो कभी लघु फिल्मों में काम कर लेना। याने जहाँ सुख की अनुभूति हो, वहाँ मन लगे, लगा लेना..।

और कभी-कभी कुछ समय अपनी दाड़की के हिस्से वाली लॉण्ड्री पर जाकर कर्त्तव्य पूरा कर लेते थे। शेष समय पालतू बनाम जंगली बिल्लियों के खान-पान की जिम्मेदारी से निकलता रहा। हाँ, पहले दो प्यारे-प्यारे कुत्ते भी हुआ करते थे, मगर असमय साथ छोड़ गए तो बाद में घर में बिल्लियां पलने लगी थीं।

> ***पैसा ही सब कुछ नहीं होता मेरे दोस्त,***
> ***दिल की गहराई नापना सीखो***
> ***पैसा तो हाथ की मैल होता है***
> ***फासले तय करना सीखो***

जीवन का नया अध्याय इस तरह पनपने लगा था

जीवन में फिर कोई नई बहार आएगी, इसकी सचमुच कल्पना नहीं की थी। मेरा जीवन तो पत्रकारिता और अभिनय से जुड़ा रहा, पत्रकारिता तो बरकरार रही और रंगमंच से साथ तो नहीं छूटा लेकिन समय के अभाव में नाटकों का मंचन निरन्तर होना सम्भव नहीं हो पा रहा था, इसी बीच मेरी नई प्रतिभा अभिनय और पत्रकारिता के साथ- साथ गायकी में उभरी और गायन का सफर शुरु हो गया। महू

में मेरे हास्य गीतों को श्रोताओं से दाद मिलने लगी। युगल गीतों में महिला साथियों का अच्छा साथ मिला। महू में मेरे मरहूम मित्र रहे आफताब अंसारी की बेटी शिफा अंसारी के साथ गायकी का लम्बा सफर चला। आज की शिफा गायन में उँचाइयां नाप रही है लेकिन उन दिनों शिफा के संघर्ष के दिन हुआ करते थे और इंडियन आयडल में सफलताओं के बाद भी उसे इंदौर जैसी जगह पर स्थायित्व नहीं मिल पा रहा था।

मैंने शिफा के लिये अपने अखबार प्रिय पाठक में कई बार गायकी को लेकर प्रशंसाओं की खबरें लिखी। धीरे- धीरे उसकी इंदौर संगीत क्षेत्र में घुसपैठ हुई और देखते ही देखते वो चल निकली।

सोचकर यही खुशी हुई कि मैंने जब- जब उसके बारे में अखबार में लिखा वो उसकी ऊँचाइयों से सार्थक होता चला गया। हांलाकि उसके स्वभाव में पर लगते ही बदलाव आया। उसने पलट कर ये नहीं चाहा कि अपने इस पार्टनर को कहीं तो बुलाकर साथ गायन में अपना फर्ज पूरा करती...खैर ऐसा होता ही है जब हवा ऊपर का आसमान दिखाने लगती है तो जमीन पर पैर रखने की इच्छा समाप्त हो जाती है।

इधर गायन के सफर में मैं इंदौर में नई पहचान बनाने लगा। हास्य गीतों से मेरी दर्शकों में पहचान बढ़ने लगी। इस सफर में अचानक सामने आई नई गायिका कनिका कौर, इसके स्वर ने मुझे रिझा दिया। तब भी नहीं सोचा था कि ईश्वर मेरे आगे के जीवन में कनिका के साथ क्या नई रचना करने जा रहे हैं। कनिका का साथ मंच पर मुझे भाने लगा था, उसके गीतों के साथ मेरे युगल गीत बढ़ने लगे। कनिका मन से गम्भीर लड़की और स्वभाव से थोड़ी मसखरी भी। उससे बढ़ता यही लगाव स्नेह से बढ़कर प्यार में बदल गया। लेकिन मैं इससे ज्यादा कुछ सोच नहीं पा रहा था कि आगे क्या-क्या नया होने वाला है। क्योंकि मेरी जिंदगी के पन्ने तो ऊपर वाला ही लिख कर खोलते जा रहा है।

> ***सूरज कभी अस्त नहीं होता,***
> ***ये समझना भूल है कि उसके डूबते ही***
> ***संसार डूब जाता है....***
> ***उसकी किरण में बहुत दम होता है***
> ***जो दूर तक आशाओं का संसार जगाती है***

कनिका का मेरे जीवन में पदार्पण कुछ इस तरह से हुआ...

बात 2019 की रही होगी जब प्रेस फोटोग्राफर पवन बड़ोनिया एक दिन मुझसे बोले कि सुपरसिटी कालोनी, महूगांव, महू में रहने वाली दो बहनें बहुत अच्छा गाती हैं, चलकर एक बार उनकी प्रतिभा को भी परखो। पवन के बार बार कहने के बाद एक दिन मैं उसके साथ उन दोनों बहनों से मिलने चला गया। नेहा और कनिका दोनों बहनों ने जब एक- एक गीत सुनाए तो लगा सचमुच इनके गले में सरस्वति विराजमान है। सोचा कि दोनों बहनों को इंदौर के मंच पर लाया जाए। क्योंकि पता चल रहा था कि महू के मंच से उन्हें गुटबाजी और भेदभाव के चलते उभरने का मौका नहीं मिल पा रहा है। इसी बीच सोचते-सोचते दो साल कोरोना जैसी बिमारी के चलते बीत गए।

2021 जाते- जाते दोनों बहनों संग इंदौर के मंचों पर संगीत कार्यक्रमों की शुरुआत अच्छी हुई। संगीत में डूबने वाले श्रोता नई आवाजों से मुखातिब हुए। दोनों नई गायिकाओं को प्रतिसाद मिला, लेकिन नेहा से कहीं अधिक कनिका को पसंद किया जाने लगा, क्योंकि उसकी आवाज में क्लासिक टच भी रहा। उसे ताल और सुर की अच्छी पहचान जो है। स्वर्गीय मुकेश चौहान से उन्होंने संगीत की प्राथमिक शिक्षा ली थी। यही वजह भी रही कि मुझे कनिका का साथ निरन्तर भाने लगा। कनिका के साथ युगल गीतों की ट्युनिंग भी बैठने लगी थी। इसके बाद अक्सर कनिका के घर आना जाना शुरु हो गया। ऐसा इसलिये भी होने लगा था कि मैं अपने ही घर में अपनी परिवार के बीच एक औपचारिकता बनकर रह गया था, पत्नी का झुकाव तेजी से अपने बेटों, बहुओं के साथ-साथ उनकी माँ और चंद सहेलियों के वार्तालाप में ज्यादा गुजरने लगा था। मैं एक मशीन बनकर रहने लगा था, बस अखबार का प्रकाशन नियमित रखा और घर के पालतू कुत्तों को नहलाना, खाना खिलाना, घुमाना यही सब कुछ मुख्यतः करता रहा। जब दुर्भाग्य से कुत्ते असहज परिस्थितियों में मृत्यु को प्राप्त हो गए तो उनका स्थान एक बिल्ली ने ले लिया। शासा नाम की खूबसूरत सफेद बिल्ली को पालना अच्छा भी लगा लेकिन धीरे धीरे उसने अपना कुल बढ़ाना शुरु कर दिया और दो साल में ही उसके आधा दर्जन बच्चों की जिम्मेदारी भी मुझ पर आ गई। इस तरह जिंदगी में मूक जानवरों की सेवा के साथ -साथ अन्य बातों में भटकाव आना शुरु हो गया।

किसी वृक्ष की टहनियां भी
अपनी जिंदगी के पन्ने लिखती है
वृक्ष का तना तो उसे सिर्फ
सहारा भर ही देता है उनको

कहानी ने खोले नए पन्ने इस तरह...

कहानी का नया मोड़ तब आया जब कनिका 12वीं के बाद आगे और पढ़ना चाहती थी, मगर परिवार सहमत नहीं था। ऐसे में कनिका की इच्छा को मैंने समझ कर बढ़ावा दिया। कनिका की इच्छानुसार उसने इंदौर में एयर होस्टेज का एक सालाना कोर्स ज्वाइन किया। सुन्दर, सुडोल बदन और चेहरे पर तेज के चलते उसे एयर होस्टेज की ट्रेनिंग में बेहद रुचि रही, लेकिन ट्रेनिंग के लिये मेकअप और ड्रेसअप प्रतिदिन जरुरी था। ऐसे में रोजाना महू से इंदौर आना- जाना बस या रेल में सम्भव नहीं था, सो विचार किया कि मैं ही क्यों न ये जिम्मेदारी भी निभाऊं, क्योंकि इंदौर में लगभग हर दिन ही मेरा आना-जाना अपनी मॉडर्न लॉण्ड्री पर तो होता ही था, इसलिये सोचा कि कनिका को साथ लाना ले जाना करने में क्या हर्ज है।

इधर रोजमर्रा की जिदंगी को लेकर पत्नी संग हालात तेजी से औपचारिक होते जा रहे थे, इसलिये कनिका की एयर होस्टेज कोर्स करने की कहानी मैंने बताना उचित नहीं समझा, न ही उसे पता चली। मगर ऐसी बातें छुपती कहाँ कि जब 21 किमी के रास्ते में हर परिचित आँख हमें आते जाते देख रही हो....सो रोज का इंदौर लाना ले जाना अंततः पत्नी को धीरे धीरे पता चलते ही अनुचित लगने लगा, जो स्वाभाविक भी था। मैंने भी मन की बात, बताना व्यर्थ में उचित नहीं समझा। लेकिन पारिवारिक संबंधों में यह आग की चिंगारी गलतफहमियों के चलते भभक चुकी थी, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। गलतफहमी का सबसे बड़ा कारण था कि कनिका को नाबालिग समझा जा रहा था और मुझे एक अपराधी की तरह कि मैं किसी नाबालिग पर डोरे डाल रहा हूँ। मुझे जरा भी इल्म नहीं था कि अक्सर कनिका से व्हाट्सअप पर होने वाली बातें पत्नी की नजरों से छुपती होंगी। लेकिन मैं नहीं समझ पा रहा था कि जब दीवारों के भी कान होते हैं तो टीवी डिवाइस पर खुला रहने वाली व्हाट्सअप साइट नजरों से कैसे ओझल हो सकती है। इधर, इंदौर में किसी न किसी संगीत आयोजन में हमारे सुर और संगत के फासले नजदीक होते जा रहे थे, जो धीरे-धीरे अपनत्व और प्यार का बीज बो

गए... और इसी प्यार का खुलासा सच के साथ मैं एक दिन पत्नी से कर बैठा, क्योंकि उसके चेहरे का मुरझायापन मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, सो भाव भंगिमा भांप कर मैंने सच उगलना जरुरी समझा।

भीतर के सच का मतलब समझा नहीं गया
ऊपर की हवा से ही मतलब रखा गया
सच कहकर अपना दामन साफ रखना चाहा
मगर न मालूम था कि ये सच
मन के हिमालय को कंपा रहा था

सच बोलने का दण्ड मिला, हुए कुँवारे

शुरु से अपनी गंदी आदत यह थी कि हम अपने पुराने पार्टनर से कुछ भी बात या सच छुपाते नहीं थे, उल्टी की तरह उगल दिया करते थे। इसलिये कॉलेज लाइफ से लेकर विवाह के पहले और बाद में भी हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में पत्रकारिता, सामाजिकता, सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ मन की चंचलता और मस्ती के जो-जो भी आलम और किस्से रहे वे, सब बताकर साझा कर लिया करते थे। किस्से सुनकर वह खिलखिलाती रही ऊपरी मन से.. और भीतर ही भीतर मन के कम्प्युटर में हर बात को सेव करती जाती थीं। हमें लगता था वो हमारी जीवन शैली को 'जियो तो बिंदास जियो' की तरह समझती होंगी..मगर यह सोचना तो हमारी भूल निकली..उस भूल का कड़वा अहसास हुआ, जब हम आखरी बार भावुक होकर हमारी युगल गायिका कनिका के साथ होने लगी प्रणय भावनाओं का सच उगल गए तो उसी सच ने हमें फिर से कुंवारा बना दिया।

सुना था चिंगारी भी भभकती है
लेकिन ये नहीं सुना था कि
मामूली चिंगारी भी जंगल साफ कर देती है

अलगाव के चलते जब इंदौर रहने चला गया

जिंदगी की नाव हिचकोले खाने लगी थी। पत्नी संग मनमुटाव तेजी से बढ़ते चले जा रहे थे। कनिका को भी लगने लगा कि बात बढ़ न जाए इसलिये वो

मुझसे दूर रहने की सलाह देती थी और पत्नी संग अच्छे संबंध बहाल करने को कहती रही। मगर यह सम्भव इसलिये नहीं हो पा रहा कि मेरे द्वारा सच बताने के बाद पत्नी किसी भी सूरत में शांति वार्ता को तैयार नहीं हो रही थी। छोटे बेटे का भी कहना था कि अलग रहने की कोशिश करो, बड़ा बेटा भी मुझसे सारोकार नहीं रख रहा था। इस तरह मुझे घर से अलग होने पर अप्रत्यक्ष तूल दिया जा रहा था तो मैंने गुस्से में तय किया कि अब इंदौर ही चला जाऊं...12 नवम्बर पत्नी के जन्मदिन का समय भी नजदीक आता जा रहा था मैं ऐसे में मनमुटाव और बातचीत बंद के चलते उनकी खुशी के बीच अवरोध नहीं बनना चाहता था, सो इंदौर में रहने का ठिकाना ढूंढा और जन्मदिन के एक दिन पहले 11 नवम्बर 2023 से सुदामा नगर के पास मिश्रा नगर में किराये का घर लेकर रहने लगा। बच्चों को झटका लगा कि अरे सचमुच पापा घर से चले गए, मगर वे निरुत्तर रहे। इंदौर में रहते हुए महू की खबरों से वास्ता तो रखना ही था और अखबार का वितरण केन्द्र भी मुख्यतः महू ही था। उन दिनों ठण्ड शुरु हो गई थी। अखबारों का बंडल एजेन्टों को देने महू ही आना पड़ता था। इस बीच बड़ा बेटा मालदीव से आया और मुझे महू बुलाया। मुझे लगा कि शायद अब बेटे संग आमने सामने बैठकर बात हो सकेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

घर पर अजनबियों की तरह मैं घुसा, बेटा चाय लिये बैठा था, मेरे कहने से पहले ही मुझ पर दो टूक सवाल दाग दिया कि -कनिका से शादी कब कर रहे हो! सुनकर मैं चौंका, उसे बताना चाहा कि ''उससे तो सिर्फ स्नेह है और उसकी पढ़ाई का जिम्मा मैं वहन कर रहा हूँ, इसलिये साथ-साथ इंदौर-महू आना जाना हो रहा है... कुछ समय की बात है सब ठीक हो जाएगा... कहते हुए विश्वास में लेना चाह रहा था मगर मेरे दिल की बात पूरी न हो सकी। लेंकिन बाद में बेटे ने बात को आगे नहीं बढ़ाया और मालदीव के लिये लौटते वक्त उसने अपनी कार बलिनो मुझसे ले ली और अपनी माँ को सौंप दी।

अब मेरे पास सहारा रह गई थी वो स्कूटी, जिसे 25वीं सालगिरह पर पत्नी को गिफ्ट बतौर खरीदकर लाया था। मगर अक्सर घरेलु विवाद के चलते उसने स्कूटी को कभी दिल से स्वीकार ही नहीं किया था। इसलिये इंदौर में अकेले रहते हुए स्कूटी ही मेरा इकलौता साधन बन चुकी थी। ठण्ड में स्कूटी से अखबार लेकर हर रविवार सुबह 5 बजे इंदौर से निकलकर महू जाता और एजेन्टों को अखबार देकर वापस 9 बजे लौटता था।

बेहतर होगा महू लौट आओ....

इस तरह इंदौर रहते हुए दो ही माह हुए होंगे मेरा इस तरह से अलग होना पुत्रों को कुछ अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे वापस महू आकर रहने को कहा और समझाइश दी कि महू के घर में ही पॉर्टिशन करके अलग-अलग रहो। तब तक, जब तक कि आप दोनों के बीच संबंध बहाल नहो जाएं, वरना अलग- अलग हो जाने पर ही विचार करना। इस तरह मैं उनकी बात मानकर इंदौर में किराये का घर छोड़कर वापस महू आ गया तब अपने ही घर में पॉर्टिशन कर मैंने रहना शुरु कर दिया, जो धीरे धीरे मेरे लिये बहुत अजीब होता जा रहा था

एक ही कमरे में मैं और मेरी बिल्लियां, लोन पर उठाई कार

मैं जब वापस महू आया तो मुझे अपने उसी घर में पत्नी ने बच्चों के कहने पर एक हॉल, छोटा किचन और बाथरुम दे दिया गया, जो पुराना था। इस तरह एक ही घर में अलग-अलग रहते हुए अपरिचितों की तरह दिन गुजारने लगा। तब कुल 7 पालतू बिल्लियां और एक बिल्ला ही मेरे साथी बन कर रह गए थे... बिल्लियों की परवरिश तो मैं ही करता रहा था क्योंकि पड़ौस के कमरों में पत्नी एक कुत्ता पाल चुकी थी जिसके कारण बिल्लियों का आना जाना उधर बंद हो चुका था। हमारी बिल्लियां सब जंगली थीं, इसलिये घर की छत पर से आम के वृक्ष पर चिड़िया, गिलहरी आदि का शिकार उन्हें भाता था। वे उनका शिकार न करें, इसलिये बाजार से प्रतिदिन सौ रुपए का चिकन लाकर पकाकर खिलाता था। सुबह-शाम उनके पेट की चिंता में अक्सर रातें भी कुरबान होने लगी थी। पालतू कुत्ता तो फिर भी नियत समय पर खा पी ले, लेकिन बिल्लियों की प्रवृत्ति, उन्हें जब भूख लगे खाते रहना होता था, इसलिये रात्रि जागरण भी मजबूरी का हिस्सा बन गई थी जो मेरी कार्यक्षमता पर भी प्रभाव डाल रहा था। इधर अखबार की तैयारी, छपाई और वितरण...इन सबके लिये हर सप्ताह के आखरी तीन दिन की अखबार तैयारी के लिये बहुत भारी होते थे, भारी इसलिये कि बिल्लियों की सेवा चाकरी में नींद पूरी नहीं हो पाती थी। बिल्लियां कम्प्युटर पर भी उछल कूद मचाए रहती थी। इस बीच घर में गायक मित्र संजय यादव के आने पर भी मेरे बेटे विरोध कर चुके थे, इसलिये कभी- कभी संजय संग दो- दो पैग घर से बाहर दूसरी सड़क

पर खड़े होकर हो जाते थे। लेकिन अकेलापन आगे की जिंदगी पर प्रश्न चिन्ह लगाता जा रहा था। उधर कनिका भी मेरे इस तरह जीने से परेशान हो रही थी। फिर भी संगीत के मंच पर कनिका का साथ मिलने से मन बहल जाता था। बगैर कार के इंदौर- महू लॉण्ड्री से आना जाना रिस्की होता जा रहा था, सो इरादा किया कि लोन पर नई कार खरीद लूँ। मैंने नई कार वेगनआर लोन पर उठाई तो बेटे करन को पता चलने पर उसने तुरन्त मुझे दो लाख रुपए भेज दिये ताकि लोन का भार कम हो, उसने ऐसा करके अपनत्व बताया। इधर दो लाख मुझे पोस्ट ऑफिस के जमा धन से मिले थे जिसमें से एक लाख कार में और बाकी से कनिका की एयर होस्टेज की ट्रेनिंग फीस भर दी थी, क्योंकि उसके पिता ने कहा था कि वे फीस बाद में दे देंगे, हांलाकि वे नहीं दे पाए थे।

दो नाव की सवारी

हर रोज अकेले एक कमरे के घर में रहते हुए मेरे हर पल अजीब से उलझन भरे गुजर रहे थे। मगर सोचता था कि ये दो नाव की सवारी भी कब तक चलेगी... लेकिन फैसला नहीं कर पाया कि करुँ तो क्या करुं। बाकी समय इंदौर लॉण्ड्री से घर आते ही बिल्लियों की जिम्मेदारी...तो मुझे मेरे पेट की चिंता भी होती थी कि आज क्या खाकर पेट भरुं... हालत यह थी कि छोटे से किचन में बिल्लियों के लिये रोज चिकन काटकर पकाना और वहीं पर अपने लिये रोटी बनाना या नाश्ता खाना करना... सब कुछ अजीब सा होता जा रहा था। मेरे बिस्तर से लेकर कपड़ों तक बिल्लियों के बाल ही बाल हुआ करते थे, क्योंकि बिल्लियां अपनी पेटपूजा के बाद हल्के होने के लिये मेरे बिस्तर पर ही उछलकूद करती थीं। घर में अलग रहते हुए पास के दूसरे पत्नी वाले हिस्से में कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी, क्योंकि बातचीत बंद थी और बीच में से दरवाजा भी बंद किया जा चुका था। गर्मी के दिन आते ही बिना एसी और कूलर के बीच केवल पंखे की हवा से दिन भी गुजरने लगे। इस बीच बड़ी बहू जब मालदीव से महू मिलने आई तो उसे मेरे एक कमरे में रहने वाले हालात अच्छे नहीं लगे। उसने तत्काल आर्डर देकर ए सी लगवाया, ये उसके मन में मेरे लिये दया भाव उमड़े थे जो मुझे आज भी याद रहते हैं। इस तरह वहाँ बिताए आखरी 7 महिने अकेले रहते हुए मुझे यह कड़वा अहसास करा रहा था कि पड़ौस में रहने वाली पत्नी के मन में मेरे प्रति तड़प क्यों नहीं जाग रही है। यही सोचता रहता था कि ये पहेलियों से भरी जिंदगी अब आगे

कैसे हल होगी.. बीच की अनबन का सिरा कहाँ निकलेगा...!

जिनके साथ बरसों सांसे गुजरती थीं,
वे सांसें लुप्त होने लगी थी,
तो नई सांसों का बंधन अपनत्व का अहसास
करा मुझे लगातार खींचे चला जा रहा था

पहला बम फोड़ा एडवोकेट विक्रम दुबे ने !

मेरे अखबार संबंधी क्राइम केस लड़ने वाले युवा अभिभाषक विक्रम दुबे से दोस्ताना संबंध हो चले थे। उनके भारत माता के कार्यक्रम में पत्नी संग मेरा भी सहयोग होता था। एक दिन उनका कॉल आया और उनके द्वारा बोले गए शब्दों ने एक तरह से जमीन खिसका दी, लगा जैसे बम फटा हो और धरती हिली हो। वे बोले- भाभी आई थी ऑफिस और कह रहीं थीं वो तुमसे अलग होना चाहती है इसलिये विवाह विच्छेद (डायवोर्स) चाहती है। सुनकर मैं सन्न रह गया तो बात यहाँ तक पहुँच गई...!

मैं थोड़ा गम्भीर हो गया। फिर मैंने दुबे जी को सारा वाकया वैसे ही बताया जैसा अपने बेटों को बताता आ रहा था, मगर दुबे ने कहा अब कोई समझौता नहीं हो सकता, क्योंकि भाभी अब साथ रहना ही नहीं चाहती है, बेहतर होगा स्वेच्छा से हो जाओ अलग..! स्वेच्छा..! ये शब्द भी मुझे हजम नहीं हुआ क्योंकि यदि विवाह विच्छेद चाहती हैं तो फिर मेरा क्या होगा... मेरे पास तो कुछ भी नहीं! मैंने उनसे कहा कि 39 सालों में मैंने जो दिया वो भले ही थोड़ा था, तो बदले में उसका क्या..!

वे बोले- भरण पोषण की मांग भी नहीं है उनकी, तो फिर आपकी मांग क्यों! मैं पशोपेश में पड़ गया। फिर अपने बेटों से बात की, उन्होंने कहा कि हाँ, अब माँ साथ नहीं रहना चाहती, लेकिन आपसे हमारे रिश्ते रहेंगे क्योंकि आप हमारे पिता हो। इस तसल्ली से मैंने भी तलाक के लिये अनमने भाव से हाँ कर दी। मन ही मन यह भी सोचता रहा कि क्या सचमुच तलाक हो जाएगा..! क्या ये सब करना इतना आसान होगा..! कनिका को जब बताया तो वह भी घबरा गई फिर बोली एक बार बात तो कर लो उनसे शायद मामला निपट जाए...मगर मैं जानता था वह बात तो क्या, देखना भी पसंद नहीं कर रही थी इसलिये हालात ऐसे ही बनते चले गए

और इंदौर कुटुम्ब न्यायालय में केस लग गया। पहली तारिख पर भी उनका रुख अड़ियल और कड़ा मिला। मैं जानता था कि कड़े निर्णय लेने में वो कभी पीछे नहीं रहती थी... सो पहली तारिख हो गई। दूसरी, तीसरी और चौथी तारिख पर कोर्ट द्वारा समझाने की कोशिशें की तो लगा टूट जाएगी, मगर ऐसा नहीं हुआ, अब तो ये सब मुझे नागवार लगने लगा था और साफ लग रहा था कि तलाक तो होके ही रहेगा।

उथल-पुथल लेकर आया वर्ष 2023

वर्ष 2023 मेरे लिये उथल-पुथल लेकर आया जब कोर्ट में तलाक केस के चलते मैं असहज हो चला था। ये सही था कि इस कदम से मैं कनिका का साथ भी नहीं छोड़ना चाहता था क्योंकि वह गीतों के लिये मंच पर मेरी जोड़ीदार बन गई थी और मेरे स्नेह, प्यार पर भरोसा करने लगी थी। अलावा मैं उसकी आगे की शिक्षा के लिये उसका साथ भी दे रहा था। उन्हीं दिनों मित्र राजिक फर्शीवाला ने स्वर परीक्षा के लिये कनिका को मुम्बई लाने को कहा। मैं उसे सिर्फ एक दिन के लिये लेकर मुम्बई गया था ताकि उसकी गायन क्षमता को कोई कद्रदान मिले। फर्शीवाला ने संगीतकार राशिद भाई से मिलवाया था। राशिद भाई ने कनिका से गीत सुनकर कहा- कनिका की आवाज अच्छी है मगर इसे मुम्बई में रहना होगा, ताकि मन लायक अवसर मिल सके। मगर मुम्बई में रहना इतनी जल्दी कैसे..ये मेरे अखबार, आर्थिक परिस्थितियां और तलाक के केस के चलते तय नहीं हो पा रहा था। इधर कनिका भी मानसिक अवसाद में थी, उसके परिजनों को मेरे बढ़ते मेलजोल को लेकर विरोध शुरु होने लगा था इससे उसे दिमागी समस्या से जूझना पड़ रहा था, जिससे माइग्रेन ने दस्तक दे दी थी। डॉक्टर प्रखर अग्रवाल से राय ली -उन्होंने सुझाव दिया कि कनिका को शांत जगह पर कुछ दिन गुजारने होंगे..शांत जगह कहाँ..ये विचार भी झनझना रहे थे क्योंकि कनिका के परिवार में रोज की चिक- चिक के चलते उसका वहाँ रहना भी सम्भव नहीं हो रहा था, न मैं उसे ऐसे में कहीं अलग रख पाता। इसी बीच गोवा घूमने का इरादा किया लेकिन कैसे जाएं, इसके लिये हमने झूठा प्लान बनाया ताकि उसके घरवालों को शक न हो, यही बताया कि संगीत के लिये हमें मुम्बई फिर जाना होगा और यह बताकर हम गोवा पहुँच गए, बिल्लियों के खाने पीने का भार उत्तम नामक मोहल्ले के युवक के भरोसे छोड़ गए।

गोवा के सफर ने ही पक्की मुहर लगाई

मेरे स्नेही मित्र और कांट्राक्टर शेलू सिंहल ने हमें गोवा स्थित अपने फ्लैट पर कुछ दिन गुजारने की सुविधा दी। कनिका को अच्छा लगा, उसे 7 दिन के सफर से दिमागी शांति मिली। गोवा से आने के बाद परिजनों की कठोर नाराजगी के चलते कनिका को दिमागी तनाव और तेजी से बढ़ने लगा था। ऐसे में माइग्रेन की समस्या बढ़ने लगी। दिसम्बर बीत रहा था और बार-बार लग रही तलाक की तारिखों ने तय कर दिया था कि अब तलाक होकर ही रहेगा। इसलिये गोवा में रहते हुए कनिका संग प्यार की गहराइयों से आगे का साथ भी तय हो गया था। गोवा तो यूँ भी दो प्रेमियों के लिये मौसम-ए बहार है। साथ रहते हुए जब जिंदगी के नए आयाम सामने आने लगे तो महसूस हो गया था कि अब कनिका का साथ छोड़ पाना सम्भव नहीं है। शायद गोवा के पर्यावरण में प्यार की तरंगे भी बहती हैं जो दो दिलों को एक करने में कसर नहीं छोड़ती। हम रोज समुद्र किनारे जाकर बैठते थे। शाम का समां और भी इरादों को मजबूत करता जा रहा था।

मुसीबतों के बीच गॉल ब्लाडर में स्टोन और अपेन्डिस

एक तरफ घर में अकेले रहते हुए तलाक के केस से भूचाल आया हुआ था तो दूसरा तलाक की नजदीक आती तारिख दिमाग पर सलवटें दे रही थी। तलाक पर मुहर तो लगनी ही थी ऐसे में अपने ही घर से निकल कर नए आशियाने की तलाश तेज हो गई थी। 2024 लग चुका था। जनवरी का महिना चल रहा था.. एक रात अजीब से दर्द ने अल सुबह 4 बजे से परेशान किया, चना गोदाम के बंगले वाले हिस्से से बाहर रात 3 बजे से 5 बजे तक सड़क पर टहलता ही रहा, मगर दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। सुबह होते ही डॉ महेश तिवारी को कॉल किया और बताया। उन्होंने फौरन कहा कि हमारे तिवारी हास्पिटल पहुँचो। सुबह 7 बजे डॉ. महेश तिवारी के अलावा, डॉ. वैभव तिवारी और डॉ. सौरभ तिवारी भी आ पहुँचे। इस शंका से कि कहीं मुझे दिल का दौरा तो नहीं पड़ा है, इसकी जांच शुरु हो गई लेकिन जब सारी रिपोर्ट में नार्मल पाया गया तो फिर कहा गया कि सोनोग्राफी करवाइये। मॉडर्न पैथालॉजी पर विनय शर्माजी से सोनोग्राफी करवाई तो पता चला कि गॉल ब्लॉडर में 18एमएम का पत्थर है और बहुत सारे छोटे छोटे भी हैं। शायद दर्द किसी पत्थर के पास होने से आया होगा, ये जानकर

सुझाव दिया गया कि गॉल ब्लॉडर रिमूव्ह करा लिया जाए। थोड़े दिन सोचने समझने में चले गए, सोचा एक बार और सोनोग्राफी करा लूँ तो डॉ. सचिन सोलंकी का सहारा लिया। डॉ. सोलंकी ने पाया कि गॉल ब्लॉडर में स्टोन तो है ही, लेकिन अपेन्डिस भी अच्छी हालत में नहीं है। इसलिये दोनों को ही रिमूव्ह कराया जाए एक ही ऑपरेशन में, ये भी सुझाव डॉ सोलंकी ने दिया। पत्रकार होने के नाते मेरा बीमा प्रदेश सरकार ने करा ही रखा था, सो इंदौर के विशेष जुपिटर अस्पताल में डॉ. अमिताभ गोयल को दिखाया और ऑपरेशन की तारिख तय हुई। इधर गृहस्थी के हालात और बेकाबू हुए तो ताबड़तोड़ किराये का मकान 4 किमी दूर किशनगंज स्थित इंद्रपुरी कालोनी स्थित प्रजापति टॉवर में मिल गया। 29 फरवरी 2024 को ही मैं कनिका संग शिफ्ट हो गया, क्योंकि इधर कनिका के परिवार में भी कलह तेज हो गई थी और मेरी तकलीफ को देखकर उसने भी घर छोड़कर मेरे साथ रहना मंजूर किया। लिव इन रिलेशनशिप का अनसोचा अध्याय इस तरह से शुरु हो गया।

अस्पताल में ऑपरेशन के वक्त परिवार का कोई नहीं

1 मार्च 2024 से पूरे पांच दिन इंदौर के विशेष जुपिटर अस्पताल में गुजारे जहाँ मेरा गाल ब्लाडर और अपेन्डिस का सफल ऑपरेशन हुआ। इस दौरान परिवार का कोई सदस्य उपस्थित नहीं हुआ। ऐसे मे कनिका ही अटेन्डर बनी। हालांकि उसी दौरान बड़ा बेटा करन मेरे ऑपरेशन का रीजन बताकर मालद्वीव से आए और बेटे ने अस्पताल में रोज रुकने को भी कहा, मगर मैं जानता था कि वह कम समय के लिये आते हैं, इसलिये मैंने दबाव नहीं दिया फिर भी वह मुझे ऑपरेशन के बाद महू तक छोड़ने घर तक आए। खर्चे का भी पूछा, लेकिन तब मुझसे इसकी जरुरत नहीं था क्योंकि मेरा जनसम्पर्क मप्र शासन, भोपाल के माध्यम से एम डी इंडिया का बीमा किया हुआ था, सो काम आया और ऑपरेशन खर्च का सिरदर्द नहीं रहा। अस्पताल में बढ़िया एयर कंडीशंड प्राइवेट रुम भी मिला था जहाँ से पहाड़ के व्यू सुंदर दिखाई देते थे। ऑपरेशन के दूसरे दिन ही एक हादसा अस्पताल में भी हो गया। मुझे आपरेशन के वक्त सीने से लेकर पेट तक 5 जगह पंक्चर किये गए थे और एक जगह चीरा लगाया गया था। सावधानी रखनी थी लेकिन बाथरुम में नहाते वक्त मैं फिसल कर सीने के बल जा गिरा। ये

सोचकर बुरी तरह घबराया कि टांके खुल गए होंगे, मगर बाल- बाल बचा, सभी टांके सही सलामत रहे। ऑपरेशन के बाद घर लौटे। किशनगंज इंद्रपुरी के नए किराये के घर को जमाने की जद्दोजहद शुरु हो गई। 1984 के दिन याद हो आए जब पहले विवाह के बाद मुझे पिता के घर से बेदखल होना पड़ा था और तब महू सांघी स्ट्रीट के जैन समाज के घर में किराये के दो कमरों में ही सात साल गुजारे थे। अब फिर से किराये के कमरों में बसाहट के दिन आए... तो देखते हैं इस नए जमाने में किराये के घर में कब तक टिकना हो सकता है। लेकिन हार्दिक इच्छा है कि भले ही महू क्षेत्र में रहूँ लेकिन अपना घर हो, किराये का नहीं... बहरहाल तो जेब इसके लिये तैयार नहीं है।

विवाह विच्छेद पर न्यायाधीश ने मुहर लगा दी

पहले हमसफर के साथ का एक चेप्टर 2024 में खत्म होने जा रहा था, वहीं मेरी किस्मत के कम्प्युटर द्वारा दूसरे हमसफर के चेप्टर की स्क्रिप्ट कनिका कौर को लेकर लिखी जा रही थी,..जिसका मुझे नहीं पता था कि वो कितनी सही होगी या गलत... और अंततः परिणाम क्या होगा। छोटे बेटे ने तब कनिका के साथ के संबंधों को लेकर कहा था कि ''मुझे तो आपका भविष्य डूबता नजर आ रहा है''। उसकी बात, उसकी सोच पर निर्भर करती थी, जैसा वो देख- समझ रहा था। उसके प्रश्न पर मैंने तत्काल उत्तर नहीं दिया, यदि देता तो उसे शायद बुरा लगता, क्योंकि वह बचपन में जान चुका था कि पहली शादी के वक्त महू में स्थित मेरे पिता के घर से भी निकलने को मजबूर होना पड़ा था। तब भी हम पति-पत्नी बिना छत के अकेले हो गए थे... वो भी पूरे सात साल तक। इन सात सालों तक गोपाल मंदिर के पास 137 सांघी स्ट्रीट की पहली मंजिल वाले घर में किराये के दो छोटे कमरों में जीवन गुजारा किया था। ये सत्य तो दोनों ही बेटों को भी पता है, कि रेडक्रास अस्पताल में दोनों के बारी-बारी से जन्म लेने के बाद उनका लालन पालन भी उन्हीं छोटे से किराये वाले घर में हुआ था। इसलिये मैंने छोटे बेटे को उसके ताजा प्रश्न पर यह बताना उचित नहीं समझा कि 39 साल पहले भी हमने अकेले होकर हिम्मत से आगे का जीवन जीना शुरु किया था और अब भी वही परिस्थितियां नए हमसफर के साथ सामने आईं हैं तो एक बार फिर इस परीक्षा के दौर से गुजरेंगे ही, अब इसमें हमारा भविष्य उन्नति कारक रहे या हानिकारक... ये भी वक्त ही बताएगा।

आखिर 2024 में पुराना सफर हुआ खत्म

योग ही होता है जो संबंध जोड़ता और तोड़ता है। कुटुम्ब न्यायालय इंदौर ने 31 मई 2024 को मुहर लगाकर हमारे पुराने सफर को विच्छेद कर दिया। इस आदेश ने मुझे कुँवारा बना दिया। 39 साल पुराना वैवाहिक सफर मात्र 6 महिने में हलाक हो गया... आखरी रोज कोर्ट में अलग-अलग रास्तों पर चलने के सिवा दोनों के बीच कुछ बचा नहीं था। ऐसे में पूर्व हो चुकी पत्नी द्वारा वकील के मार्फत कहलाए गए शब्दों ने मुझे बुरी तरह झकझोरा, ये शब्द मुझ तक पहुँचाए गए कि -मैं मर भी जाऊं तो मेरा मरा मुँह भी मत देखना... आखिरी की लाइनें इसलिये कड़वी लगी कि इतने सालों के वैवाहिक जीवन के बाद इतनी नफरत करना ठीक नहीं... क्योंकि जब तलाक स्वेच्छा के आधार पर और उन्हीं की पहली मर्जी से हुआ है तो व्यवहार में इतना विषैलापन कैसा..! यूँ भी कौन, कब जिंदगी से विदा हो जाएगा, ये कहना हमारे हाथ में नहीं होता है... परिस्थितियां कब कैसी हो ये तो विधाता के हाथ में होता है... रही अंतिम विदा की बात... तो उसमें तय करने वाले आप और हम तो हो ही नहीं सकते। मुझे याद आया कि उन्होंने ऐसे ही कड़ुवे शब्द शादी के 25 साल बीत जाने के बाद भी कहे थे, कि मैं तुमसे प्यार नहीं करती थी... तुमने मुझे आकर्षित कर शादी के लिये बाध्य कर दिया था। याने ये दर्शाना चाहा था कि मेरा प्यार एकतरफा था..शायद तब ही मुझे समझ जाना था कि हमारी शादी एक तरफा ही थी, जिसे मैं आखरी तक मानकर चला कि जीवन हमेशा साथ ही चलेगा, भले ही कितनी ही परिस्थियां क्यों न बदल जाए... मगर दूसरी बार में यह मुगालता भी साफ हो गया। अब लगता है कि उनके ख्याल अलग- अलग होने में शुरु से ही उनके मन में बीजारोपण कर गए थे, जो अंततः उनके द्वारा लिये गए अलग होने के निर्णय को तटस्थ करके ही माने..!

> ***कटे हुए वृक्ष के तने भी बतला देते हैं***
> ***कि ये कभी लहलहाते भी रहे होंगे....***

कनिका का साथ लिव इन रिलेशनशिप के चलते जुड़ चुका था क्योंकि तलाक की वजह से मुझे अकेले अवस्था में छोड़ना नहीं चाहती थी। एक प्रश्न मेरे दिमाग में अक्सर आता था कि 39 साल के हमसफर का साथ टूट सकता है तो नए जुड़े हमसफर का क्या भरोसा... कब तक चले... लेकिन अब इतना अनुभव हो गया है

कि या तो नया हमसफर जीवन भर साथ चले तो किस्मत हमारी और यदि ऐसा नहीं हो सका तो जो भी किस्मत में होगा स्वीकार होगा। क्योंकि मुझे आज भी बरसों पुराने उस ज्योतिष की बात याद है जिसने मुझे कहा था कि काम करते चलो, सोचो मत कि आगे क्या होगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ की रेखाएं तुम्हारे आगे के रास्ते खोलती रहेगी। यह भी कहा था कि दुश्मन तुम पर कभी विजयी नहीं हो पाएगा... इसलिये मैंने भी नए हमसफर के साथ नया जीवन जीने का फैसला कर लिया है। वह भी मेरे कदम से कदम मिलाने के लिये पत्थर की तरह अडिग है। इरादे उसके भी ठोंस हैं। जीवन में तकलीफें और संघर्ष तो आते रहते हैं, एक सच्चा प्यार साथ रहे, वही काफी होता है... और मेरा प्यार अब एकतरफा नहीं है, बल्कि पूर्ण प्यार से ओतप्रोत है। साथ-साथ मंच पर गीत गाते हुए पास आए हैं, तो गीत गाते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते रहेंगे। यदि योग ही ऐसे बने हैं तो फिर इसमें किसी को कोई को दोष नहीं दे सकता था न ही हमें कोई दोषी ठहरा सकता था।

> ***वो साथ अधूरा रह गया***
> ***जिसे आजीवन निभाने का सपना देखा था***
> ***दूसरा साथ लगातार उम्मीदें जगा रहा था,***
> ***जो मेरे लिये नया संसार था***

अंधा प्यार... जो उम्र का अंतर भी नहीं देखता

यह बात बिल्कुल खरी और सत्य है जो मेरे जीवन में फिर एक नया मोड़ ले आई... शायद ईश्वर नहीं चाहते थे कि मैं जब अकेला हो जाऊं तो मेरी शेष जिंदगी सूनी हो जाए... क्योंकि मेरे स्वभाव अनुसार रुआंसा, उदासी, आँखों में आंसू लिये मेरा चेहरा ज्यादा देर कभी नहीं रहा... हर बुरी बात या तकलीफ के क्षण मुझे हर समय दुख में नहीं रखते थे। क्योंकि ईश्वर ने ही मुख पर लालिमा और होठों पर मुस्कराहट का उपहार जो दे रखा है, इसलिये 2024 में विवाह -विच्छेद जैसा दंश भी झेल गया। लेकिन अब नए जीवन साथी का जीवन में आना किस्मत में लिखा होगा तभी तो ये उलटफेर हुआ होगा। अलग होने के बाद और साथ-साथ रहने से कनिका मुझे अब पहले से ज्यादा चाहने लगी थी। उसे लगता था कि जो कुछ हुआ उसके पीछे का कारण वही है तो ऐसे में मुझे एकांगी जीवन कैसे जीने

दे, ये विचार उसे मेरी ओर, और भी खींच लाए। लेकिन मैं तो तब भी नहीं सोच पा रहा था कि आगे क्या होगा... क्योंकि कनिका से विवाह करना जैसा कदम मुझे अविश्वसनीय लग रहा था क्योंकि वो तो मेरी उम्र से आधी भी नहीं है... मात्र 21 साल..! फिर कैसे...सम्भव!

> *बीच भंवर में ठहरी रह गई थी मेरी नाव*
> *तभी उसने पतवार थमा दी और नाव फिर चल पड़ी*

लिव इन रिलेशनशिप कब तक... दूसरे विवाह ने लगाया पूर्णविराम..

भले ही सरकार ने लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता दे दी हो लेकिन ये संबंध दोस्ती और कुछ समय तक के लिये ठीक हो सकते हैं। लम्बे समय तक इसमें बने रहना संबंधों में कई प्रकार की दरारें पैदा करता है इसलिये जरुरी है कि लिव इन रिलेशनशिप को तब तक ही रखा जाए, जब तक आप एक-दूसरे से भली-भांति परिचित न हो जाए।

मैं भी लिव इन रिलेशनशिप में कनिका संग लगभग साल भर रहा। क्योंकि तब पहली पत्नी से विवाह विच्छेद होना लगभग तय हो गया था, इसलिये कनिका ही सहारा बनती नजर आ रही थी। ऐसे में लिव इन रिलेशनशिप में साथ रहते हुए एक प्रश्न दिमाग में कौंधता रहा कि कब तक हमारा साथ ऐसा चलेगा। तब मेरी उम्र 66 वर्ष के अंतिम पड़ाव पर चल रही थी जबकि कनिका 22 पर पहुँच चुकी थी।

गीतों से शुरु हुआ सफर तीन साल बाद प्यार में बदला

28 फरवरी 2024 से जनवरी 2025 तक साथ-साथ रहने के बाद यह नागवार गुजरा कि हम कब तक लिव इन रिलेशनशिप में रहेंगे। तलाक के बाद कनिका संग साथ को लेकर भी गाहे-बगाहे सवाल उठ रहे थे कि हम दोनों किस हैसियत से साथ-साथ हैं।

इसलिये तय किया गया अब विवाह कर ही लिया जाए, तभी सभी शंका और कुशंकाओं का पटापेक्ष हो सकेगा। यूँ 11 माह साथ-साथ रहते मैंने कनिका को

कई बार राय दी कि तुम्हारे सामने तो लम्बी उम्र पड़ी है, परिवार या अपनी पसंद से विवाह कर लो, लेकिन उसका एक ही जवाब था ''मेरे दिल में आपके सिवा कोई नहीं, इसलिये दूर जाने का ख्याल दोबारा मत करना''। उसके कड़े इरादे देखते हुए विवाह को मैं अंततः तैयार हुआ। विवाह का इरादा भी दोनों बेटों को बता भी दिया, उन्होंने भी मौन स्वीकृति दी।

10 फरवरी 2025 को सादे कार्यक्रम में हम दोनों विवाह सूत्र में बंध गए। मेरे पत्रकार मित्र एस के तिवारी, राजेन्द्र श्रीवास, अरुण सोलंकी, राधे कौशल, राजेश जोहरी, दिनेश राठौर, विनय स्वामी, पवन बड़ोनिया और बचपन के साथी रहे गोविंद सोनी और उनकी पत्नी, मित्र संजय शर्मा, संजय यादव, मोहनराव वाकोड़े, रवि मेहरोलिया इस विवाह के साक्षी बने। पंडित चतुर्भुज जोशी ने कोदरिया स्थित पत्रकार राजेश जोहरी के उत्कर्ष विद्यालय के परिसर में हिन्दू विवाह रीति से सात फेरों के साथ हमें एक दूसरे से बांध दिया। इस विवाह को मैंने जोर शोर से नहीं किया क्योंकि मैं मेरे पूर्व के परिवार और कनिका के रुठे हुए परिवार का दिल नहीं दुखाना चाहता था।

इसलिये विवाह 15 स्नेहियों की उपस्थिति में करने के साथ ही एक छोटा सा रिसेप्शन भायाजी रोड स्थित गुलमोहर रेस्तरां में रख दिया, जिसमें आमंत्रित कुल 100 में से 80 अतिथि केवल 24 घंटे के ऑनलाइन बुलावे पर सहर्ष आ गए। इनमें डॉक्टर, वकील, समाजसेवी, पत्रकार और मित्रों की उपस्थिति रही। मित्र प्रकाश छापरवाल और पवन बड़ोनिया ने फोटो वीडियो कवर किये।

छोटे से बुलावे पर चाहने वाले रिसेप्शन में आए...

10 फरवरी 2025 को मेरे विवाह में शामिल होने वाले पत्रकार और मित्रों के अलावा 17 फरवरी को दिये रिसेप्शन में मुझे चाहने वाले या मेरे निर्णय को स्वीकृति देने वाले कई लोग छोटे से बुलावे पर आ गए। महू से डॉक्टर वर्ग में विवेक दुबे, सचिन सोलंकी, आर के बघेरवाल, एस पी अग्रवाल, सौरभ तिवारी, बी के ठाकर, विनय शर्मा, रवि चौहान, सुरेश चौहान, जे पी धर्मा, वकील वर्ग से अशोक जायसवाल, शेखर बुंदेला, हंसराज वर्मा, दिनेश पंचोली, अभिषेक जायसवाल, कहानी लेखिका नीता श्रीवास्तव, समाजसेवी राधेश्याम बियाणी, तापोशी -अनुराग सक्सेना, मित्र मंडली से रामकिशोर शुक्ला, कैलाशदत्त पाण्डेय, अशोक पंवार, राजिक फर्शीवाला, जीतू वर्मा, संजय शर्मा मामा, सरदार मालवीय,

देवीप्रसाद शर्मा, धर्मेश्वरी बाथम, पत्रकार मित्र भरत ढोली, शुभांकर श्रीवास, टोनी शर्मा, सुनिल काले, राजेश शर्मा, नरोत्तम माहेश्वरी, नितिन पटवा, जसवंत सिंह बिष्ट, मनीष अग्रवाल, मनीष शुक्ला, रंजीत स्वामी, राकेश कनोजिया, कमलेश यादव, रिचर्ड फ्रेंकलिन, सुचित बंसल, राकेश चौधरी, दिनेश वर्मा के अलावा इंदौर से संगीत संस्था बेसुरी बिछात से गुरदीपसिंह, राजेश गोधा, संजय शर्मा और पत्रकार रवि यादव, निलेश परमार, अंकित शुक्ला, मॉडर्न लॉण्ड्री से संजय विश्वकर्मा, हर्ष, दिनेश कुमार, राजेश परदेशी, दिनेश माने आदि भी शामिल हुए।

मुझे अफसोस रहा...

1984 में मैंने पहला विवाह आर्य समाज में करने के बाद चम्पावाला बंगला में जोर शोर से रिसेप्शन दिया था कोई 700 से 800 अतिथि शामिल हुए थे। लेकिन दूसरा विवाह मैंने बिना किसी शोर शराबे के किया ताकि गलत संदेश न जाए। इसलिये मैं चाहकर भी अपने बहुत से करीबियों, मित्रों, समाजजन, आशीर्वाददाताओं आदि को आमंत्रित नहीं कर पाया, इसका मुझे खेद रहा। इसके बावजूद कई परिचितों ने हमें दिल से शुभकामनाएं दीं जिनके प्रति भी हम दोनों आभारी रहेंगे।

अब तक दो बार त्यागने पड़े घर..

अब तक की लाइफ में मूल रुप से दो बार घर त्यागने पड़े। पहली बार 1984 में प्रेम विवाह करने पर पिता के 1178 भगतसिंह रोड, महू वाले निवास को छोड़ना पड़ा था और दूसरी बार पहली पत्नी से नाता टूटने पर मुझे 71, माल रोड, चना गोदाम, महू वाले घर से भी अलग होना पड़ा। लेकिन बच्चों के इस विश्वास के साथ कि आप जहाँ भी रहेंगे, हमारा साथ आपको मदद के रुप में मिलेगा, मैंने घर छोड़ने का निर्णय बिना किसी शर्त रखे ले लिया था। आज मैं और नई हमसफर कनिका पत्नी के रुप में किराये के कमरों में ही हैं। याने खुद का घर अभी नहीं है। शायद पहले की तरह अपना घर बनाने में और साल लगेंगे, जब तक कि बैंक अकाउन्ट गंवारा नहीं करे। भले ही मेरी उम्र में अब ढलान हो, मगर हिम्मत है कि मैं नए साथी के कारण अकेला नहीं हूँ... ईश्वर ने चाहा तो फिर डूबती कश्ती एक दिन किनारा पकड़ लेगी।

मुझे बहुत दिनों से आ रहे थे सपने..
कि मुझसे कुछ खोता जा रहा है...!

सपने सच होते हैं ऐसा कहा जाता है, सपने छलते हैं, ऐसा भी कहा जाता है और सपने यथार्थ नहीं होकर काल्पनिक होते हैं, यह भी कहा जाता है लेकिन मुझे भी विवाह विच्छेद से कुछ माह पूर्व से अजीब गरीब सपने आने लगे थे। जैसे मैं कहीं कार से जा रहा हूँ और उसे जहाँ पर मैंने कार पार्क की, बाद में मुझे कार वहाँ नहीं मिलती थी। कार के अलावा स्कूटी, साइकल के भी गुम होने के सपने आते थे। मैं सपने में उनके खोने का बहुत दुख करता था, बल्कि सपने में रोता भी था। मगर ऐसे सपने मुझे बार-बार और तेजी से आते रहे थे, ज्यादातर कार के आते थे कि वह अमुक जगह से गायब है... विवाह विच्छेद होते ही सपनों का राज समझ में आ गया है...कोई सामान क्यों खोता जा रहा था... इसका अहसास हुआ कि जब पत्नी बंधन तोड़ गई... बेटे की जिस बलिनो कार में सफर करता था, वह छूट गई... जिस मोहल्ले में 32 साल गुजारे, वो मकान, वो मोहल्ला छूट गया... मोहल्ले के साथ ही साथ चलने वाले जोजी और राजू असमय मौत के प्यारे हो गए...प्यारे श्वान सिम्बा और सेल्फी छूट गए... साथ में रहने वाली बिल्लियों का साथ छूट गया... घर के आम, सीताफल, जाम सब छूट गए... बगीचे में चहलकदमी, नीम के वृक्षों की छांह भी खो गई... याने बार-बार आने वाले सपनों का इशारा था... तेरा बहुत कुछ छूटने वाला है जो छूटता ही जा रहा था। ईश्वर करे अब कोई और खोने वाला सपना नहीं आए मुझे..।

74 साल बाद लॉण्ड्री का भी स्थान परिवर्तन

उथल पुथल से भरे 2024 में एक ओर स्थान परिवर्तन भी नसीब में लिखा था। फरवरी माह में चना गोदाम वाले घर को छोड़ने के बाद नवम्बर माह में इंदौर स्थित साझेदारी फर्म मॉडर्न लॉण्ड्री का स्थान परिवर्तन भी करना पड़ा। मकान मालिक से चल रही न्यायालयीन लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक जा पहुँची थी जहाँ हमें हार मिली। इसलिये 1952 से चले आ रहे रामपुरावाला बिल्डिंग एम जी रोड, इंदौर वाले किरायेदारी स्थल को खाली करना पड़ा। इत्तेफाक से पास ही थोड़ी दूरी पर ही गांधी हॉल, शिव मंदिर के सामने जी जी टॉवर में जगह मिल गई और लॉण्ड्री पूर्व की भांति चल पड़ी। इस तरह परिवर्तन ही संसार का नियम है, इस लिहाज से व्यावसायिक ठिये के दो परिवर्तन भी हुए, जिन्हें स्वीकार किया गया।

मंच ने खोले मोहब्बत के तीन अवसर...

हाँ मैं तो रंगमंच पर नाटक खेला करता था, लेकिन नाटक में निपुण कोई लड़की मेरे जीवन में नहीं आ सकी। कुंवारे रहते हुए दूसरे शहर से आई एक रंगमंच कलाकार लड़की से जरुर प्यार हुआ था मगर वह तो पहले से ही इंगेज निकली... मैंने उसके ब्रेकअप को मंजूर कर लिया। मगर लगाव नृत्य देखने से था, खासकर तब उस लड़की के नृत्य पर फिदा हो चला था, जिसे चाव से मैं दर्शक बनकर निहारा करता था। मगर पता नहीं था कि मैं सम्पर्क में आने के बाद उससे इतना प्यार कर बैठूंगा कि वह हमसफर बन जाएगी। लेकिन भगवान नटराज की इस शिष्या से मेरा नाता अब टूट गया और माँ सरस्वति की शिष्या से जुड़ गया है। जब मैं गायक बना तो गायन के सफर में नया हमसफर मिल गया... ये भी एक इत्तेफाक है कि ये हमसफर भी प्रतिभाशाली है, जिसके गले में सरस्वति विराजमान है और हम दोनों एक मंच पर कई बार युगल गीत गा चुके हैं इसलिये असली जीवन में भी युगल जोड़ी की वह हिस्सा बन गई। इस तरह मंच से लगाव ने मोहब्बत के तीन अवसर खोले।

बेटों की दी सीख याद रहेगी...

आज मेरे दोनों हंसते-खेलते जवां स्मार्टी पुत्तर अपने-अपने संसार में बहुत खुश हैं, उनकी सीख मुझे हमेशा याद रहती है। छोटे बेटे ने मुझे कार चलाते समय सीट बेल्ट बांधने की आदत डाली थी, उसकी जिद ऐसी थी कि जब तक सीट बेल्ट बांध न लूं गाड़ी आगे बढ़ने नहीं देता था। वहीं बड़े बेटे ने सिखाया था कि आगे वाली गाड़ी से पर्याप्त दूरी रखना चाहिये, ताकि अचानक ब्रेक लगने से हम अपनी गाड़ी रोकने में समर्थ हो सकें। साथ ही मोड़ पर कार को सावधानी से ड्राइव करना भी सिखाया था। इसलिये ये सीख मुझे अक्सर याद रहती है। मुझे लगता है कि एक बाप होने के कारण शायद मैंने भी कुछ न कुछ तो उन्हें बचपन से बड़े होने के बीच सिखाया ही होगा... हो सकता है उन्हें याद भी हो..!

बहन की आत्मीयता ने कराई जोधपुर की सैर

नये विवाह और नए बंधन को जहाँ मेरे परिवार के कुछ सदस्य भी हजम नहीं कर पा रहे थे वहीं मेरी छोटी बहन अनुराधा जोधपुर में रहते हुए मेरी परिस्थितियों

पर नजर रखे हुए थी। वह व्याकुल थी क्योंकि वो मुझे शुरु से जानती थी कि उसका ये भाई जीवन में संघर्ष करता चला आ रहा है ऐसे में आगे बढ़कर क्यों न उसका साथ दूँ। कनिका से उसने आत्मीयता से व्यवहार कर हिम्मत बढ़ाई। इसी आत्मीयता के चलते पिछले साल 2025 मार्च के अंतिम सप्ताह में हमने जोधपुर की सैर कर ली। बहन और उसके तीनों बच्चों ने जो अब बड़े हो गए हैं, उनमें से निशांत और खुश्बू ने हम दोनों को जोधपुर के नामी किले मेहरानगढ़ की सैर कराई। जीजा दिलीपजी ने नमकीन का टेस्ट कराया तो भांजी रोमा के घर भोजन करने गए। बाजार में खरीददारी की लेकिन बहन ने कनिका को खर्च करने नहीं दिया। इस तरह हम जोधपुर में तीन दिन रहे और हमें बहन का प्यार अपनत्व से भरा था।

अब आगे क्या..!

मेरी नई जिंदगी में अब सहारा मेरी नई पत्नी है... कनिका, असली शैक्षणिक नाम है सलोनी। हाल फिलहाल छोटी बहन अनुराधा भाटी मेरे हालचाल अक्सर पूछती है। बीच बीच में मेरी बड़ी बहन निर्मला भी हालचाल जान लेती है। वहीं छोटा भाई योगेन्द्र पुराने ख्यालातों के चलते मेरे नए विवाह से दूरी बनाकर चलता है तो उससे छोटा भाई जितेन्द्र भोपाल में रहकर भी हाय-हलो कर लेता है। मेरा बड़ा बेटा कहता है जब हेल्प लगे बता देना, कर्ज पूरा करना है, वहीं छोटा बेटा अक्सर पूछता है क्या चल रहा है..! छोटा बेटा (डॉ. चैतन्य सोलंकी) बीते साल जुलाई में महू आए तो मेरे किसनगंज स्थित घर भी आए। यहाँ उनकी आत्मीयता देखकर मेरा मन द्रवित हुआ और आँखों में आँसू भी छलछलाए, जब उसने लौटते समय मेरे पैर छुए। आँसू इसलिये भी निकले कि जिस बड़े बेटे को मैने बचपन में बहुत प्यार दिया था, वह अब अचानक गलतफहमी का शिकार होकर दूरी बना रहा है, लेकिन मुझे विश्वास है कि एक दिन उसे मेरे प्यार की याद जरुर आएगी।

एक वर्ष बीत गया...

इस साल 2026 की बीती 10 फरवरी को विवाह की पहली सालगिरह तामिलनाडु के ऊटी में सम्पन्न हो गई। ऊटी की हरी-भरी वादियों में पहाड़ों के बीच सुंदर और सुकून के पल बिताए तो कुछ ऐसे लोगों की बातें याद हो आई जो

हमारे विवाह को लेकर व्यंग्य और अशुभ बातें कर रहे थे। एक वरिष्ठ शिक्षिका ने कहा था कि कुछ महिने में ही तुम्हारी नई संगीनी तुम्हें छोड़कर चली जाएगी जिसके आकर्षण में तुम फंस गए हो, एक भाजपा नेत्री का कहना था कि तुमने गंदा काम किया है, सफल नहीं होगे कभी... तो एक इंदौर के मित्र बोले- यह कदम असहनीय है। अब किसको क्या कहें! सबकी अपनी अपनी सोच है, लेकिन मैं इतना कह सकता हूँ कि किसी की व्यक्तिगत जिंदगी में दखल देने वाले आप कौन होते हो! परिवार के सगे हों तो थोड़ा समझ में आता है लेकिन जो लोग सिर्फ सम्पर्क में हों और जिनको हमारी निजी जिंदगी से कोई लेना देना नहीं होता है, वें क्योंकर हस्तक्षेप और घोषणा करने के हिमायती बनते हैं, ये बात उन्हें ही समझने की ज्यादा जरुरत है कि वे अपने आप में कोई महात्मा या पीर न बनें। बहरहाल, चंद लोगों को छोड़ दिया जाए तो ढेरों प्रशसंक भी हैं और ऐसे कई मित्र भी हैं जिन्होंने विवाह के बाद सालगिरह पर भी आत्मीय भाव से शुभकामनाएं दीं हैं। आज हम दोनों ने विवाह के एक वर्ष देखते ही देखते बिता लिये और आगे भी ईश्वर ने चाहा तो सब ठीक ही होगा।

एक मजाक...मेरी लाइफ स्टोरी पर फिल्म भी बन सकती है...

ऐसा उक्त वाक्य मैं नहीं कहता, ये शब्द तो मेरे मित्र, भाजपा नेता और फिल्मी दुनिया से ताल्लुकात रखने वाले राजिक फर्शीवाला के हैं। वे जब मेरी जीवन की अब तक घटी कहानी का पूर्वार्ध से लेकर वर्तमान तक का वृतांत सुनते हैं, समझते हैं.... तो उनके मुंह से एक ही शब्द निकलता है-तुम्हारी लाइफ पर तो फिल्म बनना चाहिए। वो इस बात पर मोहर लगाकर बोलते हैं कि खुदा ने चाहा तो तुम्हारी कहानी पर फिल्म मैं बनवाऊंगा। अब ऐसा मैंने क्या गजब कर दिया, जिससे मेरी जीवन यात्रा पर फिल्म बने! ऐसा जब मैं भी फिल्मी अंदाज से सोचता हूं तो लगता है कि हां, इतनी सारी घटनाएं घटित हुईं है और वह भी अजीबोगरीब... तो सचमुच फिल्म तो बन सकती है। अपन तो बना नहीं सकते और ना अपन इतने बड़े वाले हैं कि हमें लेकर कोई सोचे कि अपनी लाइफ पर फिल्म बनना चाहिए। इसलिए दिल बहला लेते हैं कि हां, मेरी लाइफ पर फिल्म बनना चाहिए और हो सकता है, कभी बने भी। अब ये हमारी दूसरी लिखी पुस्तक की आत्मकथा है तो कुछ तो दिल का हाल बताना ही होगा वरना पाठकगण सोचेंगे जबरन कहानी को

खींचा जा रहा है और फिर ऐसी कहानी के पीछे कौनसी बेतुकी फिल्म बनाने की बात की जा रही है... तो इसके लिये मैं पहले आपको मेरे जीवन के बीते कुछ और पलों से रुबरु कराना चाहूंगा, तभी तो कथित फिल्मी कहानी का प्लॉट नजर आएगा।

कुछ नहीं था मैं... बस सुंदर लेखनी ने पत्रकार बना दिया

मैं उन दिनों 1974 से 79 तक महू के शासकीय पीजी कॉलेज (अब भेरुलाल पाटीदार कॉलेज) में अध्ययनरत रहा। बी कॉम और एम कॉम की डिग्री यहीं से ली और लॉ की डिग्री प्राइवेट आर सी जाल लॉ कॉलेज से 1983 में ग्रहण की। मैं महू शासकीय कॉलेज में एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) में रहते हुए हस्तलिखित अखबार निकाला करता था, नाम था एनएसएस समाचार पत्र। रंग बिरंगा और अच्छी हैण्ड रायटिंग के कारण विद्यार्थियों के बीच काफी चर्चित हुआ। इतना कि फिर भारत सेवक समाज के एन सुब्बाराव द्वारा आयोजित शिकोहाबाद के पास रेतीले इलाके बटेश्वर में लगाए गए राष्ट्रीय शिविर में भी अखबार निकाला। अखबार के प्रति ये दीवानगी इतनी बढ़ी कि हम सचमुच के पत्रकार बन जाएंगे, इसकी भी कल्पना नहीं की थी।

दीवार अखबार की चाहत ने हमारा झुकाव सच्ची पत्रकारिता की ओर बढ़ा दिया। दैनिक नईदुनिया में पत्र, सम्पादक के नाम लिखते-लिखते हम उभरते लेखक बनकर नईदुनिया में बड़े लेख लिखने तक पहुँच गए। कई लेख प्रसंग प्रकाशित हुए, शहर के बुद्धिजीवी वर्ग में हम सुर्खियां पाने लगे। 1980 में नईदुनिया के रविवारीय अंक के प्रथम पृष्ठ पर हमारी स्टोरी महू के नामी टंट्या भील पर छपी। जो अंग्रेजों के समय के डाकू कहे जाते थे और आज क्रांति नायक के रुप में पूजे जाने वाले टंट्या भील उर्फ मामा के जीवन से संबंधित थी। उसके प्रकाशन के बाद हम और सुर्खियों में आ गए।

स्वतंत्र लेखन सतत चल पड़ा। 1983 में दैनिक भास्कर के हम इंदौर के प्रशिक्षु नगर प्रतिनिधि बने और 1984 में प्रथम विवाह उपरांत काँग्रेस नेता श्री पीडी अग्रवाल की समझाइश पर हम दैनिक भास्कर से फिर जुड़े और महू के ब्यूरो चीफ बन गए।

पत्रकारिता में जब दबंगाई आई और महू के दंगों पर चली तीखी कलम

महू में हुए साम्प्रदायिक दंगों में मैंने साहसपूर्वक स्पॉट रिपोर्टिंग भी करके पाठकों को चौंकाया। भास्कर में खूब पन्ने रंगे, पाठकों का रुझान बढ़ा। 1988 में दंगे की रिपोर्टिंग के चलते अखबार सम्पादक (मरहूम) श्री शाहिद मिर्जा से अनबन हो गई। वे मुझ पर एक तरफा रिपोर्टिंग का आरोप लगा गए जो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ और मैंने भास्कर को अलविदा कर नवभारत ज्वाइन कर लिया। यहाँ पर दैनिक भास्कर में पूर्व में रहे श्री रोमेश जोशी ने आमंत्रित किया था। कुछ साल बाद जोशीजी नवभारत छोड़ गए। उनके बाद से अखबार के मैनेजर नितिन भोण्डवे से मेरी पटरी नहीं बैठी और अंततः नवभारत को भी अलविदा कह दिया। इस तरह दैनिक भास्कर और नवभारत में लगातार सात-सात साल की पारी खेली। नईदुनिया में स्वतंत्र लेखन से शुरु सफर दैनिक भास्कर, नवभारत के बाद फ्री प्रेस, चेतना, एसडीए टाइम्स तक महू शहर प्रतिनिधि के रुप में चलाया, तो स्वतंत्र पत्रकारिता का सफर भी कई पत्र -पत्रिकाओं जैसे दिनमान, सरिता- मुक्ता, सच्ची कहानियां, जनसत्ता, धर्मयुग, संडे मेल आदि में चलता रहा। महू के साम्प्रदायिक दंगों पर हमारी एक रिपोर्ट 1988 में दिल्ली के नामी जनसत्ता अखबार में पूरे पेज पर लगी तो हम खुशी के मारे फूले नहीं समाए।

विदेश में बेचे समोसे और भारत आकर बन गए पत्रकार से सम्पादक ...

इसी बीच कुछ माह इंदौर से प्रकाशित दैनिक लोक स्वामी में इंदौर नगर प्रतिनिधि के रुप में भी निकाले। 1991 का यह अखबारी सफर कष्टदायी रहा जब सुबह 11 बजे महू से इंदौर आना, दिन भर खबरें तलाशना, रात को प्रेस में बैठकर लिखना और रात 11 बजे वापस घर महू लौटना... सब कुछ स्कूटर के साधन से होता था। अजीब सी नौकरी मजबूरी के चलते हो रही थी। इसी के चलते तीन माह में ही लोकस्वामी से भी विदा ले ली। दैनिक अखबारों में काम करने का सिलसिला छूटा सन् 2000 में जब पत्नी (पहली वाली) की नौकरी विदेश स्थित सैशिल्स आयलैण्ड में लगी तो हम भी बच्चों सहित सैशिल्स आयलेण्ड चले गए। वहाँ मैं घर का खर्च निकालने के लिये समोसे बनाकर बेचने

लगा। बाद में थ्री स्टार होटल लेमुरिया रिसोट में नौकरी लगी तब भी समोसे बनाकर बेचने का पार्टटाइम जॉब भी किया। ऐसा करने से घर के खर्च में मेरा भी योगदान काम आया वरना शायद हम आर्थिक परेशानी में फंस सकते थे। इधर बीच-बीच में स्वतंत्र पत्रकार बतौर नईदुनिया इंदौर, सरिता-मुक्ता पत्रिका दिल्ली में वहीं से लेख लिखे। सैशिल्स पर भी लेख लिखे जो बहुत पसंद किये गए। मगर साल बीतते-बीतते सैशिल्स में सब कुछ अच्छा होने के बावजूद मन नहीं लगा, क्योंकि ऐसी जगह तो घूमने के लिये 15 दिन से एक माह बहुत होते हैं। इसलिये एक साल बाद हम सब वापस स्वदेश लौटे, तो सुकून भी हुआ। फिर तय किया कि अब दैनिक अखबारों में नौकरी नहीं करुंगा सो 2001 में साप्ताहिक प्रिय पाठक के प्रकाशन के साथ हम पत्रकार से एक तमगा ऊपर पाकर प्रकाशक और सम्पादक भी बन गए। आज साप्ताहिक प्रिय पाठक को प्रकाशन के 25 साल होने आ रहे हैं।

इन घटनाओं के विकृत दौर से भी गुजरे...

पूर्व विधायक ने खोला था मोर्चा

पत्रकारिता में हमने मानहानि के कई नोटिस झेलें हैं तो न्यायालय की चौखट से भी गुजरें हैं। कई कोर्ट केस झेले, इससे पूर्व की पत्नी और बच्चों को मानसिक दबाव भी मिला था। एक बार शायद बात 1993 की रही होगी, जब शहर के एक नामी इले. व्यावसायिक संग पुराने माल रोड वाले घर पर टीवी केबल लगाने को लेकर विवाद हो गए थे। तब मेरी शिकायत पर पुलिस थाना प्रभारी सुरेश चौहान ने एफआईआर दर्ज कर व्यावसायी को हिरासत में लिया, जिस पर मेन स्ट्रीट के व्यावसायियों को मेरे खिलाफ एक नेता ने बहुत भड़काया। ऐसे में पूर्व विधायक स्व. भेरुलाल पाटीदार ने भी हाथ धो लिये और व्यावसायियों को लेकर मेरे खिलाफ जुलूस निकालकर मोर्चा खोला। महू के तात्कालीन अपर कलेक्टर प्रवीण गर्ग और एएसपी राजीव टण्डन के सामने प्रदर्शन तक कर डाला। पाटीदार उन दिनों मुझसे कुछ खबरों को लेकर रुठे हुए थे, इसलिये उन्होंने मौके को भुनाने के प्रयास किये, मगर विफल रहे जब प्रदर्शन के वक्त तात्कालीन एडी. कलेक्टर और एएसपी ने मेरी पुलिस रिपोर्ट का सच प्रदर्शनकारियों को बताया तो उनका गुस्सा शांत हो गया और वे प्रदर्शन के पीछे की साजिश से भी वाकिफ हो गए। हालांकि

बाद में स्व. भेरुलालजी से मेरे संबंध बहाल हो गए और मैंने उनके चुनाव में उनकी काबलियत को लेकर खबरों के माध्यम से बहुत मदद भी की।

वृहन्नला की हत्या...
कलम की मार से मुझ पर लादे थे कई मानहानि मुकदमें

नगर के एक चर्चित वृहन्नला रहे भय्यू की 2012 में हत्या हो गई थी। इस हत्या में मुझे सूत्रों ने एक वकील के शामिल होने का संदेह व्यक्त किया था। पुलिस में तब एएसपी पद्मविलोचन शुक्ला थे उनके सामने सूत्रों ने उपस्थित होकर सारा मामला बताया था कि अमुक वकील ने किस तरह भय्यू को ले जाकर अन्य तीन वकील मित्रों के साथ मिलकर एक कोल्ड स्टोरेज में हत्या कर शव को उमरिया के पास फेंक दिया था। इसे लेकर पुलिस ने कार्रवाई आगे बढ़ाई और मेरी खबरें केस को लेकर लगातार प्रकाशित होने लगी तो महू अभिभाषक संघ के वकीलों ने मेरे खिलाफ मोर्चा खोला। वकीलों ने हमारी बेबाक कलम के खिलाफ महू थाने पर जाकर भी प्रदर्शन किया, फिर मेरे खिलाफ केस भी जड़वा दिया। इस प्रकार एक ही समय में मुझ पर मानहानि संबंधित सात प्रकरण न्यायालय में चल रहे थे जो सब हमारी पत्रकारिता में तीखी और निष्पक्ष कलम के वार से पैदा हुए थे। मैंने अपनी पिछली किताब में लिखा था कि महू में हुई एक वृहन्नला भय्यू की हत्या को लेकर कुछ अभिभाषक निशाने पर आए थे। मेरी पिछली पुस्तक के विमोचन के बाद वृहन्नला की हत्या को लेकर मेरी कलम तीखी चलती रही, नतीजन कई मानहानि के नोटिस मिले। परिजन परेशान हो गए थे क्योंकि हर दूसरे तीसरे दिन कभी कोई नोटिस आता था तो कभी अचानक कोर्ट की तारिखें लग जाती थीं। मेरे वकील अरुण बाथम मुस्तैदी से मेरे पक्ष में खड़े रहे थे। एक साल तक मानहानि मुकदमे महू न्यायालय में चलते रहे। लेकिन फिर चमत्कार हुआ... ईश्वर मेहरबान हुआ। सारे प्रकरण केवल एक साल में ही निपट भी गए। किसी ने मजबूरी के कारण तो किसी ने दोस्ती का वास्ता मानकर मुकदमे उठा लिये। लेकिन हर बार मुझसे लिखवाया गया कि मेरे द्वारा प्रकाशित प्रकाशन के प्रति खेद है..। अब न्यायालय प्रकरणों से पीछा छुड़ाने के लिये खेद छापना भी खेद का विषय रहा, क्योंकि बिना वजह के मुकदमे लड़ने का न तो मुझे शौक रहता है और न ही मेरे पास फालतू की कमाई होती है। मेरे वकील अरुण कुमार

बाथम (अब स्वर्गीय) के सुझाव पर मैं खेद व्यक्त कर करके मुकदमों को निपटाता चला गया। एक ही साल में सारे मुकदमे ऐसे खत्म हुए, मानो लगे ही नहीं थे। मुकदमे खत्म होते देख चाशनी ले रहे कुछ लोग कहते रहे, अरे कदम पीछे मत हटाओ, उनसे मैं सवाल करता कि वकालात खर्च के पैसे कौन देगा, तो वे सांस रोक लेते थे। ये सभी केस आपसी रजामंदी से और खेद प्रकाशन से समाप्त हो गए थे, एकमात्र केस ऐसा भी था जिसमें मुझे निचली अदालत ने मेरे वकील की कमजोर वकालात के चलते सजा दे दी थी मगर ऊपरी अदालत के न्यायाधीश विकासचंद्र मिश्रा ने इस सजा को मेरे पक्ष में खड़े नए वकील विक्रम दुबे के तर्क पर खारिज भी कर दिया था। ऐसा होने पर वे लोग हतोत्साहित हो गए जो मुझे जेल में देखने के लिये आतुर हो रहे थे।

काश मेरे पास एक करोड़ होते तो अखबार दैनिक बन जाता

न्यायलयीन मुकदमे चलते जिन वकील साथियों से बुराई हुई थी उसमें से एक को छोड़कर सभी से संबंध बहाल हो गए। अब अखबार को चलाना है तो लोगों से भलाई- बुराई तो होती रहेगी... और विघ्नसंतोषी मुझे न्यायालय में भी घसीटते रहेंगे। अब तक दो दर्जन मानहानि के नोटिस झेले हैं इनमें से एक केस ही आगे तक चल पाया..। इसमें एक केस इंदौर की अदालत में आज भी विचाराधीन है जो महू में रहे एक आईएएस अफसर द्वारा लगाया गया है। उन्होंने मानहानि के लिये पूरे एक करोड़ रुपए की मांग की है। काश... एक करोड़ रुपए मेरे पास होते तो प्रिय पाठक को साप्ताहिक की जगह पर दैनिक अखबार ही बना डालता... अब ये तो आईएएस अफसर ठहरे, इन्हें कौन समझाए कि साप्ताहिक अखबार किन मुसीबतों से प्रकाशित किये जाते हैं।

आईएएस अफसर हो गए गलत फहमी के शिकार..

हम किसी की निजी जिंदगी में झांकते नहीं लेकिन महू में उन दिनों पदस्थ रहे एक आईएएस अफसर को यह भ्रम हो गया कि हमने उनकी निजी जिंदगी में दखल दे दिया। हुआ यूँ कि हमारे एक वकील मित्र ने एक दिन हमको बताया कि उक्त आईएएस अफसर ने धारनाका की एक लेडी डॉक्टर से आर्य समाज में

विवाह रचा लिया है। ये पता चलते ही हमने उन साहब को व्हाट्सअप संदेश देकर बधाई दे डाली। वे मैसेज पढ़कर मौन रहे... हमें लगा नई -नई शादी है, शायद व्यस्त होंगे, इसलिये आते अंक में हमने एक छोटी खबर छाप दी कि आईएएस विवाह सूत्र में बंधे। हमें नहीं पता था कि परदे के पीछे की छुपी वजह क्या थी जो उनको परेशानी में डाल गई। फिर भी उन्होंने हमसे कुछ नहीं कहा, मगर हमें शंका हुई इसलिये हमने अगले ही अंक में ''खबर के पीछे हमारी कोई दुर्भावना नहीं थी'', पंक्तियों की एक खबर को प्रकाशित कर स्पष्ट भी किया। मगर क्या पता था कि वे तो मन ही मन उबल रहे थे। बाद में जानकर हमें भी झटका लगा कि वे तो पूर्व से ही शादीशुदा थे..! फिर और भी उनके निजी जीवन की कुछ विवादित बातें पता चली, हमने कोई रुचि नहीं ली। लेकिन उन्होने मेरे निजी जीवन में हस्तक्षेप कर डाला और एक निजी कॉलेज के मालिक को प्रेशर में लेकर मेरी पत्नी (पूर्व) को कॉलेज नौकरी से हटाने का दबाव बनाया। इसका पता चलते ही पत्नी ने आगे बढ़कर इस्तीफा सौंप दिया, मगर आईएएस अधिकारी की इस तुच्छ हरकत वाली बात मुझे नागवार गुजरी। कुछ दिनों के बाद उक्त आईएएस का महू से स्थानांतरण हो गया। थोड़े दिनों बाद रेडक्रास अस्पताल महू के प्रबंधक रहे एक बुजुर्ग व्यक्ति ने उक्त आईएएस द्वारा उनके संग किये गए शोषण के बारे में कॉल करके बताया तो हमने उनसे घर जाकर साक्षात्कार लेकर उनका दर्द प्रिय पाठक में सचित्र प्रकाशित कर दिया। और कुछ महीनों बाद जब उक्त आईएएस उज्जैन में निगमायुक्त जब बने तो वहाँ किसी शिकायत को लेकर मुख्यमंत्री द्वारा अचानक उन्हें हटाया गया तो ये खबरें उज्जैन में खूब सुर्खियों से छपी। चूँकि वे महू में एसडीएम रह चुके थे इसलिये हमने भी खबर को बाद में छापा। इस पर उन्होंने और भड़ास निकाली... हमें कोर्ट में उक्त मुद्दों को शामिल कर मानहानि का दावा लगाकर। मामला अभी भी इंदौर न्यायालय में विचाराधीन है।

पत्रकारिता जीवन में असली सम्मान मुख्यमंत्री के हाथों मिला...

यूँ तो महू कॉलेज में हस्तलिखित समाचार पत्र से मुझे प्रशंसा मिली थी और तब से ही लेखन के प्रति मेरा रुझान शुरु हुआ था। ऐसे में मेरा पहला सम्पादक के नाम पत्र 1979 में नईदुनिया में प्रकाशित हुआ था। इसी नईदुनिया में फिर

लेखकीय क्षमता मुखर हुई और हर परिशिष्ट बच्चों की दुनिया, घर परिवार, परिवेश, अधबीच आदि स्तम्भ में मेरी कलम निखरती रही। फिर दैनिक भास्कर, नवभारत में प्रतिनिधि बतौर मुख्य पत्रकारिता के साथ-साथ देश के चुनिंदा और चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में भी स्वतंत्र कलम चलती रही। वर्ष 2009 में राज्य शासन के जनसम्पर्क विभाग भोपाल ने राज्य स्तरीय अधिमान्य स्वतंत्र पत्रकार का दर्जा दिया। लेकिन मेरी पत्रकारिता को असली सम्मान अपने अखबार साप्ताहिक प्रिय पाठक के प्रकाशन के दौरान मिला जब उसमें प्रकाशित चुनिंदा खबरों ने पुरस्कार लायक बनाया। सन् 2015 में मध्यप्रदेश शासन ने मेरा चयन आंचलिक पत्रकारिता में इंदौर अंचल से 2010 की श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिये किया था। भोपाल में सम्मान होना था, जिसमें मुझे परिवार सहित आमंत्रित किया गया था। वह पल मेरे लिये गौरान्वित थे जब मंच पर मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने शाल-श्रीफल, प्रतीक चिन्ह और एक लाख रुपए की राशि का चेक प्रदान किया। यह मेरे लिये इसलिये भी सुखद यह रहा कि कई दैनिक अखबारों में काम करने के बाद मेरे अपने अखबार प्रिय पाठक के समय यह पुरस्कार प्राप्त हुआ। बाद में इंदौर प्रेस क्लब के तात्कालीन अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल ने स्व. राजेन्द्र माथुर सभागृह बुलाकर भी मेरा सम्मान किया। मगर दुखद रहा जब महू के ही कुछ पत्रकारों को यह हजम नहीं हुआ सो उन्होंने बधाई तक देना उचित नहीं समझा। लेकिन इससे मुझे कोई फर्क पड़ना भी नहीं था, क्योंकि मैं हमेशा अपने उद्देश्य को सर्वोपरी रखता आया हूँ। कभी भी मैंने किसी अखबार या किसी पत्रकार से प्रतिस्पर्धा नहीं की, बल्कि बनते कोशिश खबरों से पत्रकारों को मदद ही की है। और खुशी इस बात से हुई जब मुझे मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान करने के बाद मेरे घर आकर मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने बधाई दी थी। विजयवर्गीय जी का मैं यूँ भी मुरीद हो चला था क्योंकि उन्होंने महू में अनसोचे विकास की गंगा बहाई थी। महू में एक नहीं, दो दो रेलवे ओवरब्रिज बनवाकर सौगात दी, अधूरा खेल स्टेडियम पूरा बनवाया था और महू-मंडलेश्वर मार्ग को नए सिरे से निर्माण कराया जो आज मिल का पत्थर सिद्ध हुआ। यूँ भी श्री विजयवर्गीय प्रिय पाठक के प्रशसंक हैं। वे जहाँ भी होते हैं और अगर सभाओं में अखबारों की बात निकलती है तब-तब प्रिय पाठक का जिक्र अवश्य करते हैं। मेरी पहली पुस्तक जियो तो बिंदास जियो के पहले भाग का विमोचन भी श्री विजयवर्गीय के हाथों सम्पन्न हुआ था। मेरे विवाह-विच्छेद की घटना से वे भी दुखी हुए हैं, क्योंकि समय रहते मैं उनको सच्चाई नहीं बता पाया था।

जिस पर बीतती है वही दर्द जानता है
इसलिये आपबीती के संकट में
हौसला खोना नहीं चाहिये...

लॉण्ड्री भागीदारी भी किसी रेकार्ड से कम नहीं

इंदौर में मॉडर्न लॉण्ड्री 1952 से चार भागीदारों की 75 साल बाद भी भागीदारी में चल रही है ये अपने आप में अनोखा रेकार्ड हो सकता है। 1952 में चार मेहनतकश भागीदारों स्व. हरिश्चंद्र बुंदेला, स्व. जियालाल कनोजिया, स्व मूलचंद सोलंकी (मेरे पिता) और कुंदनलाल परदेशी ने मिलकर मॉडर्न लॉण्ड्री नाम रखकर इंदौर, एम जी रोड स्थित रामपुरावाला भवन में लॉण्ड्री खोली थी। पिता बताते थे कि जब 1957 में मेरा जन्म हुआ तब लॉण्ड्री में पहला नौकर रखा गया था। लॉण्ड्री अपनी धुलाई रंगाई रफू को लेकर इतनी ख्यात हुई कि दूर दूर से ग्राहक आने लगे। देवास की महारानी भी तब लॉण्ड्री तक आती थीं। बहुत जलवे थे लॉण्ड्री के पूरे प्रदेश में और कोई अन्य कोई प्रतिस्पर्धी नाम दमखम के साथ नहीं था। देखते ही देखते लॉण्ड्री ने पांच शाखाएं भी खोली, लेकिन थोड़े ही दिनों काम बिगड़ने और अव्यवस्था फैलने की बात सामने आने लगी तो भागीदारों ने अपने सगे संबंधियों को आपसी भागीदार बनाकर शाखा शब्द हटाकर उन्हीं की व्यवस्था में शेष दुकानें सौंप दी। अंतिम शाखा छावनी, इंदौर की भी बंद हो गई और उसके बाद से एम जी रोड वाली लॉण्ड्री ही मुख्य और एकमात्र बरसों पुरानी होकर चलती रही।

वक्त गुजरता गया भागीदार हरिश्चंद्रजी की मौत हो गई तब उनका लड़का रोहित भागीदार बना। बाद में जियालालजी चल बसे तो बेटा सुरेश भागीदार बन गए। इस बीच लॉण्ड्री में भागीदारों के बीच मनमुटाव बढ़ते गए और फिर एक भागीदार भाई के कुछ बदमाश मित्रों ने जबरन दुकान हड़पने की साजिश रचकर शेष दो पुराने भागीदारों मेरे पिता और उनके साथ के कुंदनलाल परदेशी को बाहर कर दिया। मेरे पिता बहुत सीधे और सरल स्वभाव के थे वे सामना नहीं कर पाए। मेरे घर से अलग रहने पर यह बात मुझे देर से पता चली तो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ। कानूनी संघर्ष शुरु हुआ और स्थगन आदेश मिलने पर मुझे पॉवर ऑफ अटर्नी मिली। लॉण्ड्री में प्रवेश के लिये बदमाशों द्वारा रास्ता रोकने की कोशिशें की गईं फिर पुलिस कार्रवाई हुई और बदमाश निकलकर भागे। बाद में हमारी

भागीदारी यथावत बनी और 1992 से लॉण्ड्री फिर अपनी राह चलने लगी। पुराने ग्राहक की नजर में इज्जत कम नहीं हुई और वे आते रहे। मकान मालिक ने लॉण्ड्री हटाने के लिये किरायेदारी खत्म करने का केस न्यायालय में लगा दिया। इंदौर के निचले न्यायालय से हमें राहत मिली लेकिन बाद में हमें सुप्रीम कोर्ट तक जाना पड़ा और अंततः हार मिली। अब लॉण्ड्री रामपुरावाला बिल्डिंग से 74 साल बाद अपने ठिये से हटकर पास ही जीजी टॉवर में किराये की दुकान में फिर से अपने पुराने स्वरुप में आ गई। आज चार प्रमुख भागीदारों में से राजेन्द्र परदेशी और सुरेश कनोजिया कई सालों से अस्वस्थ रहते हुए लॉण्ड्री पर नहीं आते हैं जबकि मेरे साथ भागीदार दिनेश कनोजिया पूरी तन्मयता के साथ साथ हैं।

हम पिता-पुत्र मौत के मुँह से बाहर आए

मौत तो एक दिन आनी ही होती है लेकिन ऐसी मौत जो आकर लौट जाए वो एक नया जीवन भी देती है। मैं और मेरा छोटा बेटा इस भयानक त्रासदी के दौर से गुजर चुके हैं। मैं वर्ष 1996 में उन अज्ञान और किसी के द्वारा भड़काए युवाओं के हाथों मरने से बच गया था जो किसी गलतफहमी में आकर मुझ पर पीठ पीछे गुप्ती और मेरे पूर्व ससुर पर पेट में चाकू मारकर ये सोच भाग गए थे कि हम बच नहीं पाएंगे। ससुर को ताबड़तोड़ इंदौर एम वाय अस्पताल पहुँचाया गया इधर रात को हुई इस घटना में ठंड के सीजन में मैं पीछे लगी मार से इतना समझ पाया था शायद मुझे पीठ पर मुक्का मारकर भागे होंगे। लेकिन एक घंटे के बाद जब बार बार मुझे कमर में दर्द होने लगा तो मुझे डॉक्टर महेश तिवारी ने चेकअप किया। पीठ देखकर उनकी आँखें चौड़ी हो गई उन्होंने चेक करके बताया था कि तुम पर तो गुप्ती से हमला किया गया है। सुनकर मैं थोड़ी देर के लिये निढाल हो गया। फिर मैं भी इंदौर एमवाय अस्पताल पहुँचा वहां जाकर पता चला कि किडनी से मात्र आधे इंच की दूरी पर गुप्ती आकर घुसी थी, इस तरह मैं बच गया और टांके भर लग पाए थे।

बेटे का खाई में गिरना और एक ईश्वर के रुप में वृद्ध का मिलना

मेरे बेटे चैतन्य के साथ हादसा हुआ था 2011 में, जब वह अपने मित्र के

साथ महू से आगे जोगी भड़क के जंगल में फोटोग्राफी करने जा पहुँचा था जहाँ पर पैर फिसलने से वह कई फीट नीचे नदी में जा गिरा। जान तो बच गई थी लेकिन एक पैर की हड्डी टूट गई थी। ऐसे में उसे सकुशल वापस ऊपर ला पाना टेड़ी खीर बन गया था। इस बड़ी मुश्किल घड़ी में एक वृद्ध आदिवासी जो उस समय ईश्वर दूत बनकर प्रकट हुआ था, उनके सुझाव पर अमल किया गया और नदी में एक किमी पैदल चलकर चैतन्य को पालकी सा उठाकर कुछ आदिवासी युवकों ने सहयोग देकर उसे निकाला था। ये दोनों हादसे भूले नहीं भुलाए जाते... जब भी याद आते हैं तो मन सिंहर उठता है।

हालांकि उक्त दोनों ही घटनाएं मैंने पूर्व की किताब में विस्तार से लिखी हैं।

वर्ष 2020-21 कोरोना..

भयानक कोरोना का दौर था...

कभी कभी हम रात में, दिन में या अलसुबह भयावह सपने देखते हैं जिसकी कल्पना से ही हम आप सिंहर उठते हैं। सुबह उठकर सोचते हैं ओह भगवान अच्छा हुआ ये इक सपना था। फिर हम अपने परिजन या दोस्तों को सपना सुनाते हैं। ये भयानक, विभत्स और अकल्पनीय सपने कई प्रकार के होते हैं, जैसे दुनिया में भारी उथल पुथल हो रही हो... आप भागे जा रहे हों... आपके पीछे कोई मारने दौड़ रहा हो... आप बहुत ऊँचाई से गिरते जा रहे हो... आप कहीं ऐसी जगह हो जो बहुत वीरान हो, चारों ओर सूना पड़ा हो और आपको निकलने का रास्ता न सूझ रहा हो... आप ऐसा देख रहे हों कि लोग मर रहे हैं, पहाड़, भवन धराशायी हो रहे हों... कोई आपको जोर जोर से आवाज दे रहा हो और आपको सुनाई न पड़ रहा हो... आप चीख रहे हों चिल्ला रहे हों और कोई आपको सुन नहीं रहा हो... दुनिया में हाहाकार मचा हुआ हुआ हो और आप अपने परिजनों को खोज रहे हों... आप अपने किसी परिजन को खो बैठे हों... आप अपनी स्वयं की मौत या परिजन की मौत होते देख रहे हों... आप घबरा रहे हों कि ऐसा क्यों हो रहा है... आप रोए जा रहे हों और कोई आपके आँसू थामने वाला नजर नहीं आ रहा हो..। और भी तरह तरह के भयावह सपने... तभी अचानक नींद उचट जाती है और सहसा आपको लगता है कि ओह... ये तो सपना था... और अपने छाती पर हाथ रखकर या गहरी सांस लेकर ईश्वर को धन्यवाद देते हो कि अच्छा हुआ ये इक सपना ही था।

काश... कोरोना वायरस भी इक सपना होता या अब भी हम सब इसे भूलने के बजाय किसी भयानक सपने की तरह ही देख रहे हों, क्योंकि कइ-कई सपने इतने लम्बे होते हैं कि आप पूरी रात उन्हें देखते रहते हो और सुबह नींद खुलने पर लगता है कि बाप रे ये सपना था..! कोरोना वायरस की भयावहता किसी खतरनाक दिखने वाले सपने से कम नहीं थी।

2020 का समय... दुनिया भर में कोरोना को लेकर मचा था हाहाकार...लोग मरते जा रहे हैं... किसी को कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है... लोग एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं, आप अपनों से ही नहीं मिल पा रहे हैं... आपको घर में कैद कर दिया है... बाहर की सड़कें सूनी पड़ी हैं... घबराहट है कि कब तक ऐसी जिंदगी रहेगी... इसका सिरा आपको नहीं मिल रहा है... कहीं एक दिन हमें भूखे मरने की नौबत न आ जाए... या हम एक के एक बाद इस बीमारी से मरने न लग जाएं...ऐसे बहुत से सवाल उठ रहे हैं... कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव से। हांलाकि इंसान अमर नहीं है, उसे एक दिन तो मरना ही है... लेकिन क्या इस तरह..! इस मौत से जितना डर लोगों के दिलों में बैठा हुआ है ऐसा भय पहले कभी नहीं रहा। कोरोना वायरस की धमक से आदमी भीतर से शंकालु होता जा रहा था, उसे ये तो तसल्ली दी जा रही है कि घर में रहने से वह सुरक्षित रहेगा लेकिन गारंटी देने वाला कोई नजर नहीं आ रहा था कि ये घर की कैद आखिर कब तक..!

2020 में मौतें कम हुई थीं लेकिन भय का वातावरण शहरों गलियों गांवों में दहशत का खौफ जमकर छाया हुआ था। जबकि 2021 में मौतें ज्यादा हो रहीं थीं और इंसान पहले से ज्यादा घबराया हुआ था। भविष्य में कोरोना जैसी ऐसी और खतरनाक बिमारी न आ जाए जो फिर खतरनाक सपनों को जन्म दे सके... हे ईश्वर हमें शक्ति दे। क्योंकि हम ऐसे नहीं मरना चाहते हैं, हम जीना चाहते हैं, एक दूसरे के लिये, राष्ट्र की उन्नति के लिये..इसके लिये हमें कुछ सहना भी पड़े, त्याग भी करना पड़े... तो हम सब तैयार हैं और ऐसा हर युद्ध साहस और हौसले से ही जीता जाता है।

कोरोना में अकेले रात को सफर किया अपने पाठकों की खातिर

कोरोना की भयानकता इतनी अधिक थी कि साप्ताहिक अखबार का कैसे

प्रकाशन किया जाए ये चिंता का विषय बन गया था कि यदि नेट के द्वारा प्रकाशन सामग्री भेजकर छपवा कर मंगवा भी लिया जाए तो वितरण कैसे हों..! लेकिन मैने हिम्मत से काम लिया, अकेला ही कोरोना किट पहने इंदौर के लिये कार से निकल जाता था। अखबार प्रिंट करवा कर रात को 12 से 1 बजे के बीच घर लौटता...स्याह सूनसान अंधेरे में 21 किलोमीटर का सफर मात्र 25 मिनिट में पूरा हो जाता था। हिम्मत जुटा कर प्रिय पाठक अखबार बांटने वाले दिनेश माने, शफीक भाई, राजूभाई, मुकेश चौहान, सोहन चौरसिया, नदीम आदि ने भी सहयोग दिया। कोरोना की खबरों के लिये रोज बेवजह घर से नहीं निकलता था... किट मिला था और प्रेस को छूट भी थी, लेकिन इसका बेजा फायदा नहीं उठाया। बाजार सूने होते थे लोग घरों में पड़े कसमसाते थे। ऊपर से बार-बार पुलिस की चेतावनी... अंदर रहो... से लोग और खिसियाते थे। एसडीएम अभिलाष मिश्रा, आईएएस बेहद सख्ती और तल्लीनता के साथ शहर गांव सम्हाल रहे थे। मेरे डॉक्टर मित्रों के सहयोग से मैं प्रतिदिन व्हाट्सअप पर महू क्षेत्र में आज कितने कोरोना मरीज पाए गए, इसकी जानकारी देता था। ये जानकारी भी किसी रोमांच से कम नहीं होती थी जब लोगों को पता चलता था कि उनके ही शहर में, मोहल्ले में, गांव में अब कौन-कौन कोरोना पीड़ित हो गए हैं। कोरोना का वो भयावह मंजर भी याद है कि जब महू के मुक्तिधाम में एक ही दिन में एक साथ 6 से अधिक लाशों का अंतिम संस्कार होता था। पण्डित ओम प्रकाश शर्मा और उनके तीनों पुत्र विषम परिस्थितियों में कोरोना शवों का अंतिम संस्कार करते रहे। मेरी भाभी अनिता सोलंकी और करीबी रिश्तेदार पूर्णिमा चौधरी भी कोरोना का शिकार हो गई। महू शहर के कई लोग कोरोना के चलते 2021 में विदा हो गए... ये ज्यादा दुखद रहा। इतना ही महू तहसील के कई गांवों में भी कोरोना ने कोहराम मचाया... कई लोगों की अकस्मात मौतें हुईं।

जब कलेक्टर की बैठक के बाद पता चला कि मुझे कोरोना है

महू में मोहन अग्रवाल नामक व्यक्ति को राशन की हेराफेरी के मामले में तब मौजूदा एसडीएम अभिलाष मिश्रा ने मामला उजागर किया था। इसी संदर्भ में तात्कालीन कलेक्टर मनीष सिंह प्रेस वार्ता लेने महू आए थे। कोरोना के दिन भी चल रहे थे। प्रेस वार्ता में मैं भी पहुँचा था। वार्ता के बाद घर पहुँचा। तब हमारी

छोटी बहू निशी ने मुझे कोरोना जांच करने का दबाव बनाया क्योंकि दो दिन पहले बुखार आया था, बहू की जिद पर कि इस शंका को लेकर कोरोना की जांच करवाऊँ सो डॉक्टर टीम को संदेश देकर घर बुलवाया। जब जांच हुई तो मुझमें कोरोना पॉजिटिव पाया गया। ये बात जब पुलिस प्रशासन और पत्रकारों को पता चली तो सब चौंक गए कि कलेक्टर की प्रेस वार्ता में, मैं कैसे शामिल हुआ था... लेकिन वस्तुस्थिति बताई कि कोरोना की जांच तो मैंने बैठक के बाद करवाई थी..फिर भी कुछ को घबराहट हुई जो प्रेसवार्ता में मेरे पास ही बैठे थे। जांच के दौरान डॉक्टर पूछ बैठे कि किस-किस के सम्पर्क में ज्यादा रहते हो.. मुझे प्रेस फोटोग्राफर पवन बढ़ोनिया का नाम बताना पड़ा। दुर्भाग्य से इसी जांच के चलते फोटोग्राफर पवन बड़ोनिया भी मेरे घर आ धमके थे तो उनकी भी जांच हुई... आश्चर्य वो भी कोरोना पॉजिटिव निकले, याने मुझे उनसे कोरोना हुआ या उन्हें मुझसे...! बाद में ग्रामीण डॉक्टर की टीम पवन के घर पहुंची तो उनकी पत्नी की भी जांच हुई, दुर्भाग्य से वो भी कोरोना पॉजिटिव पाई गई।

पवन की पत्नी कोरोना में चल बसी

दुखद ये रहा कि पवन बड़ोनिया और उसकी पत्नी का जिस कॉलोनी में निवास था वहाँ के मकान मालिक ने कोरोना का पता चलते ही उन्हें घर छोड़ने और इंदौर अस्पताल जाने के लिये धमकाया। मरता क्या न करता, पवन अपनी पत्नी को लेकर इंदौर में कोरोना मरीजों के बीच भर्ती हो गए। ऐसे में उनकी पत्नी की तबीयत और बिगड़ गई। दूसरे अस्पताल ले जाया गया मगर इलाज के दौरान बच नहीं सकी, उनकी मौत बेहद दुख का विषय रही। मैं उसके दुख में शामिल नहीं हो पाया क्योंकि मैं खुद कोरोना पीड़ित होकर घर में एहतियातन कैद जो था।

कोरोना में श्वानों के लिये मटन लेने गांव जाता था

कोरोना को लेकर मुझे मेरे दोनों पालतू श्वान सिम्बा और सेल्फी तथा मोहल्ले के कुत्तों का दुख भी देखा नहीं जा रहा था। कब तक रोटी या दूध रोटी खाते, वे सब भूखे से होने लगे। फिर मैंने जुगाड़ बिठाई और कभी चौरड़िया गांव तो कभी महू के चंदर मार्ग में राजकुमार राजोरा तो कभी बण्डा बस्ती से हमीद भाई के पास जाकर चिकन- मटन ले आता था और दलिया मिला मिला कर अपने और मोहल्ले के श्वानों की भूख शांत करता था।

मौसम विशेषज्ञ का दर्जा दिया मीडियावाला ने...

कोई 10 सालों से मैं व्हाट्सअप और फेसबुक पर मौसम की जानकारी प्रेषित कर रहा हूँ। मुझे किसी प्रकार की मौसम जानकारी या अनुभव नहीं था लेकिन रुचि जरुर थी कि मौसम में क्यों और कैसे फेरबदल होते होंगे। महू में प्रदीप स्टूडियो के अजहर भाई ने एक दिन मुझे एक वेदर साइट भेजी, कहा- मौसम के लिये ये आपको उचित रहेगी। मुझे सचमुच वह साइट अच्छी लगी उसमें सैटैलाइट के ताजा चित्र और लाइव मौसम की जानकारी मिलती थी। मैंने उन्हें ध्यान से देखना शुरु किया और उसी के आधार पर गणित लगाने लगा कि देश में कब और किस राज्य या क्षेत्र में बारिश हो सकेगी। पहले पहल तो खासकर बारिश का अनुभव लिया फिर ठण्ड और आखरी में गर्मी के कारणों, हालातों और ताजा फोकस पर ध्यान केन्द्रित करने लगा।

शुरु-शुरु में कुछ मित्रों ने व्यंग्य कसे, किसी ने मेरे आकलन को झूठा ज्योतिष भी कहा, मगर मैंने परवाह नहीं की और मौसम के नित नए अनुभव लेते रहा। जैसे अखबारों और पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन करते-करते मैं पत्रकार बना, इसी प्रकार धीरे-धीरे मुझे मानसून आकलन में ८० प्रतिशत सफलता मिलने लगी। फिर भी कुछ विघ्नसंतोषी या मौसम को ठीक से नहीं जानने वाले मजाक बनाते हैं तो मुझे गुस्सा नहीं उनकी अकल पर हंसी आती है कि ये अपने घर की छत का आसमान, या अपने शहर/ गांव को देखकर बारिश आई या नहीं के आधार पर मेरे अनुमान की तुलना कर बैठते हैं। फिर भी मुझे खुशी है कि अब मैं मौसम के बारे में बहुत कुछ जानने समझने लगा हूँ।

शायद इसी कारण ऑनलाइन मीडियावाला ग्रुप संचालक श्री सुरेश तिवारी ने मुझसे भी रिपोर्ट लेना शुरु की और फिर उन्होंने पाठकों का रुझान मिलने पर मुझे मौसम वैज्ञानिक का दर्जा ही दे दिया। दैनिक दोपहर के सम्पादक नवनीत शुक्ला भी मुझसे नियमित जानकारी प्राप्त करते हैं और महू में पत्रिका के ब्यूरो चीफ गोस्वामी ने भी अखबार में मौसम विशेषज्ञ के नाम से मेरे अनुमान प्रकाशित किये हैं। अब मैं कई ऑनलाइन साइट देखकर जानकारी लेता हूँ और फिर अपने अनुभव के साथ उसका निचोड़ आकलन के रुप में देता हूँ जो कई बार एकदम सटिक परिणाम देता है।

आज सोशल मीडिया पर मेरे मौसम आकलन को दूर दूर तक देखा पढ़ा जाता है, ये मुझे मेरी नई उपलब्धि का अहसास कराता है।

प्रिय पाठक ने किए 25 साल पूरे

यूँ तो मेरा अखबारी सफर महू कॉलेज में हस्तलिखित समाचार पत्र से 1975 में शुरु हो गया था, यहीं से नई दुनिया, जागरण, स्वदेश आदि में पत्र सम्पादक से लेखन सिलसिला बढ़ा फिर मुझे स्वतंत्र लेखन के साथ साथ दैनिक अखबारों में प्रतिनिधि के रुप में काम करने का मौका मिला। सन् 2000 में सैशिल्स आयलैण्ड में समुद्र किनारे बैठकर जिस अखबार की परिकल्पना की थी उसे (साप्ताहिक प्रिय पाठक) 2001 में भारत आते ही साकार किया। महू के पाठकों का प्यार और विश्वास मिला। 8 पेजी अखबार जल्दी ही 12 पेजी रंगीन में बदल गया। पिछले 25 सालों में एक भी अनुपस्थिति नहीं दर्शाते हुए प्रिय पाठक सप्ताह का मीठा इंतजार बनकर पाठकों को लुभाने लगा है। पिछले 22 सालों तक हर साल वार्षिक कैलेन्डर भी प्रकाशित किये तो दीपावली के मौके पर स्पेशल ग्लेज्ड पेपर की सौगात भी दी। वर्ष 2007 से इंदौर के पत्रकार रवि यादव उर्फ सोनू द्वारा मेरे अखबार में डीटीपी डिझाइन वर्क कर रहे हैं। नीलेश मेरा भेजा हुआ मैटर चलाते हैं। कभी कभी नवीन यादव भी अपने भाई सोनू की अनुपस्थिति में अखबार का डीटीपी वर्क करते हैं। महू में अखबार के मुख्य एजेन्ट दिनेश माने मुझे संयोग से मिले थे जो आज तक अपना दायित्व निभा रहे हैं, किशनगंज क्षेत्र में शफीक भाई, गूजरखेड़ा में मुकेश चौहान, महू में राजू भाई, नदीम भाई भी प्रिय पाठक अखबार वितरित करते हैं, वहीं मेन स्ट्रीट में सोहन चौरसिया और हरिफाटक पर संजय स्टेशनरी और रेलवे स्टेशन पर बनोधा की स्टॉल से अखबार वितरित होता है। वेब साइट और दो सौ से अधिक समूह में सोशल मीडिया पर पीडीएफ भी नियमित भेजी जाती है। अलावा देश के कई शहरों में अखबार भारतीय डाक के माध्यम से टिकट के साथ पोस्ट के जरिये पहुँचता है। कई सालों से अखबार हर सप्ताह इंदौर की अपनी दुनिया प्रिंटिंग प्रेस पर प्रकाशित होता आ रहा है जहाँ अजीज भाई की टीम भी मेहनत करती है।

जब ब्रिगेडियर नेगी ने सुनाए मेरी आत्मकथा के किस्से

बात कुछ साल पुरानी है जब महू स्टेशन हेड क्वार्टर के कमाण्डेन्ट ब्रिगेडियर राजेश नेगी हुआ करते थे। एक शाम माल रोड पर घूमते हुए एक कपल सामने आया जिसमें से एक श्रीमती सीमा नेगी (योग शिक्षिका) थीं जिन्हें मैंने पहचान के नमस्ते की उन्होंने खुश होकर अपने पति से कहा अरे तुम इन्हें पहचानते हो, ये हैं पत्रकार दिनेश

सोलंकी जिन्होंने मुझे अपनी आत्मकथा पुस्तक जियो तो बिंदास जियो की प्रति दी थी। मैं उन्हें देखकर समझ गया कि ये इनके पति ब्रिगेडियर नेगी हैं। पत्नी की बात सुनकर उनकी आँखें चौड़ी हो गई, कहने लगे- ओ मिस्टर दिनेश मैंने तुम्हारी आत्मकथा पढ़ी है और पूरी किताब पढ़ डाली। फिर तो उन्होंने मेरी किताब के कुछ किस्से भी बताना शुरु कर दिये। मैं हैरान और खुश हुआ कि एक ब्रिगेडियर रेंक के किसी अधिकारी को इतना समय मिल गया कि वे मेरी पुरी पुस्तक पढ़ गए। फिर तो उन्होंने खड़े खड़े कोई 5 मिनिट तक चर्चा की और अपने बंगले पर आने को भी कहा। हांलाकि मैं जा नहीं पाया लेकिन उनसे वो क्षणिक मुलाकात मुझे आत्मीय खुशी का अहसास जरुर करा गई।

अखबार से जुड़े रचनाधर्मी

प्रिय पाठक में ई मेल और सोशल मीडिया के माध्यम से कई लेखक रचनाकार भी जुड़े हैं। देश विदेश पर हर सप्ताह शरद सिंगी की कलम चलती है तो सामाजिक और शासकीय कल्याणकारी विषयों पर जनपद सीईओ हरिश केशरवानी, राजनीति में डॉ. हेमन्त शर्मा, एड. अनिल त्रिवेदी, राकेश अचल, बी.आर. नलवाया की कलम चलती रही, देश भर की साप्ताहिक हलचल पर कर्नल अमरदीप का मुसाफिरनामा, वार त्यौहार और अन्य प्रसंगों पर पं. माधवप्रसाद भट्ट, फिल्मों की समीक्षा डॉ प्रकाश हिन्दुस्तानी द्वारा तथा लघु कहानियों का सिलसिला नियमित रुप से नीता श्रीवास्तव द्वारा चलाया जाता है। बीते कुछ माह से पेरेन्टिग मंत्रा स्तम्भकार में मोनिका चौहान भी नियमित रुप से पालकों में जागरुकता फैला रहीं हैं। सप्ताह में नियमित कविताओं को लिखने में प्रो रामकृष्ण सिंगी, मनोहरसिंह, संजय वर्मा, जगदीश प्रसाद तिवारी, टीकेश्वर सिन्हा, अशोक पटेल, जीवन चंद्राकर, दिनेश तिवारी, ललित महालकरी, रमेश मनोहरा, संजय तराणेकर, हरिहर सिंह, राजीव डोगरा, सिल्वा ओटेरी, आदि ऐसे रचनाधर्मी हैं जो सालों से लगातार लिखते चले आ रहे हैं। अफसोस रहा जुलाई माह में प्रो. रामकृष्ण सिंगी का आकस्मिक निधन हो गया। लेकिन वे जाते जाते भी प्रिय पाठक के लिये आखरी कविता जरुर लिख गए। ये उनका प्रिय पाठक से आत्मीय जुड़ाव बताता है। इसी तरह पिछले साल खरी-खरी के लेखक रहे वरिष्ठ अभिभाषक श्री मोहनलाल शर्मा भी असमय पाठकों से बिछड़कर चल दिये। वहीं पिछले एक साल से अनेकोंनेक नए हस्ताक्षर भी प्रिय पाठक से जुड़ गए हैं। नईदुनिया के पत्र सम्पादक के नाम की तर्ज पर प्रिय पाठक ने आपके पत्र स्तम्भ शुरु किया है जिसमें नियमित रुप से पत्र लेखक जुड़े हुए हैं।

दीपक जाजू के असमय निधन ने महू संगीत जगत को किया सूना

ये हस्ती नहीं होते हुए भी एक चर्चित शख्स की तरह रहे। महू कॉलेजों में छात्र राजनीति से शुरु हुआ जीवन बाद में मोहन सिनेमा पर प्रबंधन के रुप में चला। पिता संग बीमा व्यावसाय के साथ-साथ महू की राजनीति में सक्रिय रहे और फिर राजनीति छोड़कर संगीत की दुनिया में खो गए। अभिभाषक हेमन्त ठक्कर के निवास पर गीत संगीत का सिलसिला चलाया। तब के ख्यात संगीतकार मुकेश चौहान भी उनके संग सहयोगी रहे लेकिन बाद में मुकेश चौहान का असामयिक निधन हो गया। दीपक जाजू के नाम से फिर मित्र मंडल का गठन मित्रों की सलाह पर हुआ और महू से इंदौर तक मंडल का नाम महू के स्थानीय गायकों के साथ साथ इंदौर के गायकों के सहयोग से भी चलता रहा। कोरोना काल में भी मोबाइल पर संगीत का जुनून गायकों संग बनाए रखे। बाद में उन्हें दिल की तकलीफ शुरु हुई तो सीने में स्टेण्ड डले।

डॉक्टरों ने आराम और नपे तुले खानपान की सलाह दी। लेकिन वे घर में टिकने वालों में से नहीं होकर हमेशा संगीत के प्रति दीवानगी उन्हें आराम नहीं करने दे रही थी इससे परिवार में खटपट होने लगी क्योंकि सभी चाहते थे कि वे घर में आराम करे। इसी उधेड़बून के चलते उनके स्वास्थ में सुधार के बजाय गिरावट आती गई जिससे वे भीतर से कसमसाने लगे। अंत में उन्हें लगा कि शायद वे ठीक नहीं हो पाएंगे इसलिये शुरु से अपने मन का निर्णय लेने वाले इस शख्स ने एक रात महू के हरनियाखेड़ी रेलवे स्टेशन पर तेज गति से आती हुई लम्बी दूरी की ट्रेन के सामने छलांग लगा दी और देखते ही देखते उनका शरीर टुकड़ों में विभक्त हो गया। जिसने भी सुना वो हतप्रभ रह गया। घरेलु कारण मुख्य था या कुछ ओर, इसका पता आज तक नहीं चल सका लेकिन उनके जाने के बाद महू का संगीत जगत सूना ही रह गया। उनके नाम का मंडल अब कुछ लोग यदा कदा संगीत आयोजन कराओके से करके खानापूर्ति करते रहते हैं लेकिन जीते जी दम-खम वाला नाम सदा के लिये लुप्त हो गया इसका अफसोस रहा। एक वर्ष के बाद उनकी स्मृतियों को ताजा करने के लिये मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बड़ी और भव्य संगीत महफिल जमाई मगर इसके बाद से जाजू नाम लगभग धूमिल सा होकर रह गया।

मुम्बई में मेरे लिये तब जाजू थे और अब काजू किशमिश खिलाने वाले राजिक

वर्ष 1994-95 में मैंने मुम्बई में रहते हुए जी हॉरर शो और फिल्म गुनाहगार में अभिनय किया था। ये संयोग महू में रहने वाले प्रकाश जाजू के माध्यम से मिला था जो उस समय मुम्बई में फिल्म फायनेंसरों के लिये काम करते थे।

हालांकि 5 साल पहले मैंने 1990 में एक फीचर फिल्म सावधान में भी काम किया था, जिसके प्रोड्युसर डायरेक्टर राकेश सरैया थे तब उनके साड़ू प्रेम गोयल महू में बिटको मंजन की एजेंसी चलाते थे। प्रेमजी ने मेरी नाटक की वीडियो सरैया जी को दिखाई थी जिसे लेकर सरैयाजी जी ने अपनी नई फिल्म सावधान में अच्छा रोल दिया था। लेकिन उसके बाद से ऐसा कोई मौका नहीं मिला जिससे मुझे फिल्मी दुनिया रास आती।

5 साल बाद प्रकाश जाजू के सहयोग से फिल्म गुनाहगार और ज़ी हॉरर शो में काम किया मगर फिर लॉण्ड्री व्यावसाय के कारण मुझे अपने घर लौटना पड़ा था।

अब मुम्बई में मित्र राजिक फर्शीवाला हैं जिनसे मुलाकात मुम्बई में दो बार हो चुकी है। उनके महू स्थित घर पर अक्सर ईद के मौके पर वे काजू किशकिश और अरब देश के खजूर से स्वागत करते हैं।

राजिक फर्शीवाला के मुम्बई फिल्मी दुनिया में अनेक हीरो-हीरोइन निर्माता निर्देशकों आदि से दोस्ताना संबंध हैं। दो बार मैं उनके साथ कुछ फिल्मी हस्तियों से मिल भी चुका हूँ।

फीचर फिल्मों के बाद लघु फिल्मों से जुड़ा नाता

आजकल लघु फिल्मों का बोलबाला चल निकला है। अपने नाटककार इंदौरी मित्र प्रांजल श्रोत्रिय के साथ चार साल पहले पहली लघु फिल्म की थी नाम था - कैरिकेचर ऑन द ब्लेक वॉल।

बाद में महू के युवा निर्देशक सनी उर्फ रिचर्ड फ्रेंकलिन के साथ तीन लघु फिल्मों में काम किया, ये थी घुंघरु, 60'लव और ड्रायवर। सभी लघु फिल्में अच्छी रहीं और जीवंत अभिनय की प्रशंसा भी मिली। फिल्म 60' लव में इंदौर की मालवी भाभी प्रतीक्षा नैयर पत्नी बनी तो फिल्म ड्रायवर में स्व. दीपक जाजू की पूना में रहने वाली बहन ज्योति मालपानी ने पत्नी की भूमिका निभाई।

इंदौरी संगीत श्रोताओं के बीच गायिकी का चला दौर

कॉलेज समय में मंच पर दो बार गीत गाने का अवसर मिला था मगर नहीं मालूम था कि सचमुच गायकी से भी मेरी पहचान होने लगेगी। सन् 2010 के आसपास महू के स्व. दीपक जाजू ने संगीत का दौर शुरु किया था तब मैं भी गीत गुनगुनाने लगा था। शुरु से ही अलग हटकर गीत गाने से मेरी पहचान कॉमेडी सिंगर के रुप में बनने लगी थी। व्हाय दिस कोलावरी डी, एक चतुर नार, बिना बदरा के बिजुरिया, याहू जैसे गीतों से मुझे महू के श्रोता दर्शक पसंद करने लगे थे। उन दिनों मेरे गाये गीत ए भाई जरा देख के चलो, को भी श्रोताओं ने खूब पसंद किया। जाजू ने इंदौर में महू की संगीत बयार बहाई मगर वे उसे यथावत नहीं रख पाए। बाद में वे धीरे-धीरे स्थानीय स्तर पर ही कार्यक्रम आयोजित करते रहे लेकिन मैंने इंदौर में आयोजनों में भाग लेकर अपनी पहचान बनाना शुरु कर दी। महू सांस्कृतिक मंच के बैनर तले अब तक 9 आयोजनों को करने में भरपूर प्रतिसाद मिला है। महू में शिफा अंसारी के साथ युगल जोड़ी से चर्चा मिली वहीं इंदौर में मेरे साथ युगल गीत गाने वाली कनिका कौर संग इंदौरी श्रोताओं ने उसे भरपूर प्रतिसाद दिया मुझे खुशी है कि महू की गायिकाओं में शिफा अंसारी, माला स्टीफंस और नंदिनी कुलकर्णी के बाद कनिका कौर का नाम भी सुर्खियों में जुड़ गया है।

मन में एक खुशी रही

इस बात की मुझे हमेशा खुशी रही कि मुझे ऐसे दोस्त स्नेहियों के रुप में मिलते रहे जो मुझे अच्छे से जानते थे और मुझसे अपनत्व रखते थे। हमारी दोस्ती या स्नेह इसलिये भी रहा क्योंकि मैंने किसी से भी न कोई अपेक्षा रखी न आर्थिक सहयोग लिया। ये सम्बंध ज्यादा चलते हैं जब आप किसी मित्र या स्नेही से कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं जिसमें आर्थिक मुद्दा सामने न आता हो..।

तम्बाकू छोड़ी... शराब का शौक भी ज्यादा नहीं...

तमाखू खाने का शौक मुझे कई साल तक रहा। लेकिन 2007 से जब मैंने तम्बाखू छोड़ी तो फिर कभी सेवन नहीं किया। वहीं शराब कोई एक दो पैग तक ही मुझे ठीक लगती थी लेकिन इससे ज्यादा पीना सच पूछो तो मुझे बहुत अखरता

है और सुबह उठकर ही भान होता है कि मैंने क्यों पी ली थी इतनी। वहीं मुझे शराब पीने के समय यदि गरमा गरम खाना मिल जाता था तो मैं शराब नहीं पीता था। दोस्त यारों के साथ दो से तीन पैग हो जाते हैं, मगर अकेले में एक ही पैग अच्छा लगता है। सादा गुटका खाने का शौक भी कनिका ने बुरी आदत बताकर छुड़वा दिया।

छावनी परिषद की भ्रष्ट कार्यप्रणाली के खिलाफ चली तीखी कलम

महू छावनी परिषद में मैंने अपने कार्यकाल में बहुत अच्छे मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) भी देखे हैं जिनमें राजेन्द्र पंवार, एस नागपाल, विभा शर्मा, जे एस माही, आदि अधिकारियों के कामों से आम जनता में हर्ष व्याप्त रहा है क्योंकि इनका ध्यान पूरी तरह आम जनता के हित में होता था। लेकिन पहली बार मैंने ऐसे सीईओ का असली चेहरा भी देखा जो जनता के सामने तो हमदर्दी और आश्वासन देने लायक होता था लेकिन दूसरी ओर वो बेहद भ्रष्ट आचरण लिये रहता था। ये सीईओ हैं विकास कुमार विश्नोई। निम्न कर्मचारियों के दस-बीस-तीस के लाभ देने में इस अधिकारी ने कोई रुचि नहीं ली और अपने मुँह लगे अधिनस्थ अधिकारियों को लाभ दिलवाने में आगे रहा। बोगस सफाई ठेका चलाकर लोगों की नजरों में स्वच्छता दर्शाता रहा। इस अधिकारी ने कार्यालय अधीक्षक, मुख्य और सह इंजीनियर, सफाई अधीक्षक और राजस्व निरीक्षक के साथ मिलकर इतने घपले किये कि इनके खिलाफ सीबीआई, ईडी की जांच ही इनके चरित्र से परदा हटा सकती है। साप्ताहिक प्रिय पाठक में उक्त सभी के खिलाफ मेरी कलम तीखी होकर लगातार चली और चल रही है। दस्तावेजी सबूत इन सबको बेनकाब करते रहे जिनकी शिकायतें मैंने रक्षा मंत्रालय तक भेजी, लेकिन ये सभी भी सीईओ और उनके सहयोगियों को नजर अंदाज करते रहे। अचानक सीईओ का ट्रांसफर आदेश भी निकाले गए, लेकिन सीईओ फिर भी टिके रहे जिनके रहते महू में प्रदूषित जल से 30 बच्चे बीमार पड़े और गौवंश को काटने को लेकर बजरंग दल ने भारी प्रदर्शन कर डाला। इसके बावजूद ये सीईओ विकास के नाम पर विनाश फैलाता रहा। लेकिन मैंने भी हार नहीं मानी है और छावनी परिषद के खिलाफ मेरी कलम आज भी पलटवार करने से नहीं चूक रही है।

आम जनता को छावनी परिषद ने बंधुआ और अपराधी बना डाला

यह अफसोस की बात है कि महू की जनता सब कुछ सहन कर लेती है जब वह खुली आँखों से देखती है कि कितनी गंदगी हो रही है, कितने ढोर उनके आसपास घूम रहे हैं, कितनी बार उन्हें पानी के लिये तरसाया जाता है, कितनी बार वे मच्छरों से प्रताड़ित होते रहते हैं, अपने ही इलाकों में सड़कों के गड्ढों को देखकर उफ तक नहीं करते...आदि इत्यादि। इन सबके पीछे का कारण यह है कि यदि वें विरोध करें तो उनको परिषद आँखें दिखाता है, नल कनेक्शन काट देता है या तुरत फुरत गेंग लाकर उनके ओटले, या मकान का कोई हिस्सा अतिक्रमण बताकर तोड़ जाते हैं। इस तरह छावनी परिषद ने शहर में छोटे छोटे गली सड़क रोकने वाले अतिक्रमण फैलाए, अवैध निर्माण होने दिये जिसे लेकर परदे के पीछे अपनी जेबें भरी। इस तरह निम्न वर्ग से लेकर धनी वर्ग को अप्रत्यक्ष रुप से इतना लाभ दिया कि शहर बदसूरत और बेतरतीब होता चला गया। लेकिन अवैध कृत्य करके अपने आपको अपराधी बनाते चले गए इसी कारण किसी भी अन्याय या गलत कामों को लेकर आम आदमी से लेकर किसी भी प्रभावी व्यक्ति की आवाज छावनी परिषद के खिलाफ नहीं निकल पाती है। कुछ नेता जरुर आंदोलन की धमकी या विज्ञप्ति से विरोध का सहारा लेते हैं लेकिन वे भी इन्हीं भयों से किसी प्रकार का न तो आंदोलन कर पाते हैं न ही यहाँ के नेतृत्व कर्ता रक्षा मंत्रालय को हकीकत बयां कर पाते हैं। इसी की आड़ लेकर छावनी परिषद के निकम्मे अधिकारी अपनी जेबें भरने से लेकर तानाशाही राज कायम करने का ठेका लेकर अपने मंसूबे पूरे करते जा रहे हैं। दुख होता है कि महू शहर में कोई ऐसा दबंग नेता नहीं है जो आम जनता के लिये मैदान पकड़े, यह शहर का सबसे बड़ा दुर्भाग्य होता जा रहा है। इसलिये मैं अपनी पत्रकारिता के माध्यम से अपना फर्ज पूरा करता रहता हूँ जिसका मुझे कोई न तो भय रहता है न ही किसी प्रकार की गुलामी करना मेरे खून में होता है।

मेरी द्वितीय आत्मकथा को लेकर अपने विचार दीजिये

मेरी अब तक की कहानी आपको फिल्मी लगे, मजाक लगे, धिक्कार लगे, अच्छी लगे... ये सब मैं आप सब प्रिय पाठकों पर छोड़ रहा हूँ, क्योंकि इसका फैसला मैं अकेले नहीं कर पाऊंगा।